CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH-14

|| the gurukul ||

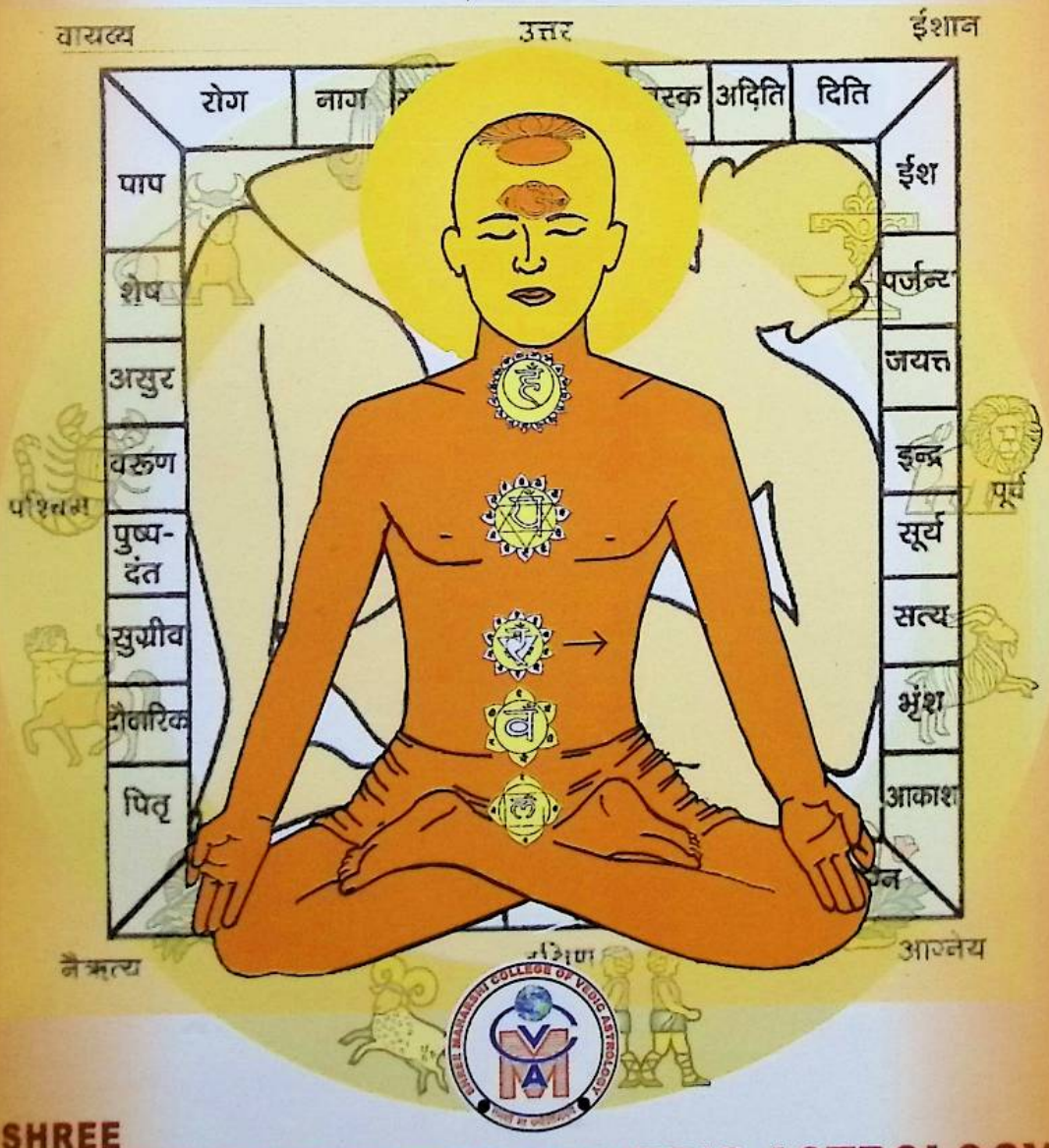

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 14

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 :	ग्रह दोष निवारण – सूर्य	3
अध्याय 2 :	ग्रह दोष निवारण – चंद्र	18
अध्याय 3 :	ग्रह दोष निवारण – मंगल	27
अध्याय 4 :	ग्रह दोष निवारण – बुध	36
अध्याय 5 :	ग्रह दोष निवारण – गुरू	43
अध्याय 6 :	ग्रह दोष निवारण – शुक्र	51
अध्याय 7 :	ग्रह दोष निवारण – शनि	58
अध्याय 8 :	ग्रह दोष निवारण – राहु	68
अध्याय 9 :	ग्रह दोष निवारण – केतु	76
अध्याय 10 :	कालसर्प योग	84
अध्याय 11 :	मांगलिक दोष परिहार	88
अध्याय 12 :	अन्य दोष	91

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – सूर्य

सूर्य, सिंह राशि का स्वामी है। इसका मूल त्रिकोण मेष का होता है। मेष राशि में यह उच्च का तथा तुला राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग लाल है। इसकी जाति क्षत्रिय है। सूर्य की दिशा पूर्व और धातु सोना व तांबा है। यह पुरूष ग्रह है। यह अग्नि तत्व का ग्रह है। इसकी प्रतिनिधि ऋतु ग्रीष्म है। प्रतिनिधि पशु लाल रंग की गाय है। इसकी अवस्था वृद्धावस्था होती है। यह सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। सूर्य के मित्र ग्रह चंद्रमा, मंगल और गुरू है। इसके शत्रु ग्रह शुक्र और शनि है। बुध ग्रह के लिये भाव का कारक तत्व प्रथम भाव (लग्न), नवम और दशम भाव है। सूर्य एक राशि में एक माह तक रहता है। सूर्य ग्रह का स्वभाव उग्र माना जाता है। सूर्य का गुण सत्व है।

सूर्य ग्रह चंद्र स्थित राशि में प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। सूर्य ग्रह के दोष निवारण हेतु विभिन्न उपाय है। सूर्य ग्रह दोष से पीड़ित व्यक्ति इन उपायों में से जितने संभव हो उतने श्रृद्धापूर्वक करे तो अनिष्ट का निवारण निश्चित रूप से हो जाता है।

मंत्रों और स्त्रोतों का जाप

सूर्य ग्रह दोष निवारण के लिये सूर्य ग्रह से संबंधित मंत्रों और स्त्रोतों का जाप किया जाता है। यह जाप शुक्ल पक्ष के किसी भी रविवार को शुरू किया जाता है। किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी मंत्र या ईश्वर के नाम को बार–बार दोहराने की क्रिया को जाप कहते है। जाप से अचेतन मन जाग्रत हो जाता है।

मंत्रो का जाप चार प्रकार से किया जाता है।

पहली विधि वैखरी कहलाती है। इसमें उच्च स्वर मे जाप किया जाता है। इस प्रकार के जाप में मंत्र स्पष्ट ध्वनि में सुनाई देता है।

जाप का दूसरा प्रकार है मध्यमा। इस विधि में होठ तो हिलते है परन्तु ध्वनि सुनाई नही देती, मंत्र जाप अंदर चलता रहता है।

तीसरी विधि पश्यंती कहलाती है। इस विधि में न तो होंठ हिलते है और न ही कोई आवाज आती है। मंत्र जाप मन ही मन में चलता रहता है।

चौथी विधि परा कहलाती है। इस विधि में जापकर्त्ता स्वयं ही मंत्रमय हो जाता है। मंत्र के जाप का मन में भी प्रयास नही करना पड़ता है। जाप स्वयं ही चलता रहता है।

इन विधियों में पहली विधि की अपेक्षा दुसरी विधि प्रभावी एवं तीसरी का प्रभाव और अधिक है तथा चौथी विधि सबसे अधिक प्रभावशाली होती है। व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार विधि का चयन करना चाहिये। वैसे शुरूआत पहली विधि से ही करना उत्तम रहता है।

मंत्र जाप के लिये प्रातः काल सूर्योदय का समय अच्छा होता है। इसके अलावा तीनों संध्या काल (सूर्योदय, दोपहर 12 बजे, सूर्यास्त) के समय भी उपर्युक्त रहते है। प्रतिदिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी एक निश्चित समय पर जाप करना चाहिये।

जाप के लिये स्थान भी निश्चित कर लेना चाहिये। प्रतिदिन एक ही स्थान पर जाप करने से लाभ होता है। जाप के लिये अलग कमरा हो तो अधिक अच्छा है। अलग कमरा न हो तो कमरे का कोई कोना निश्चित कर लेना चाहिये। जाप के समय धूप अगरबत्ती लगा लेना चाहिये। मंत्रजाप के समय सूर्य देव की छवि मन में होनी चाहिये।

जाप के समय दिशा का भी ध्यान रखा जाना चाहिये। जाप करते समय जापकर्त्ता का मुँह उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होना चाहिये।

जाप के लिये कुश (एक प्रकार की घास) का आसन या कम्बल उपर्युक्त है। इससे जाप से उत्पन्न ऊर्जा पृथ्वी में नहीं जाती है। व्यक्ति जाप के लिये पद्मासन्न या अन्य कोई आसन में बैठ सकता है, परन्तु जिस रिति से लंबे समय तक बैठने पर तकलीफ न हो उसी रीति से बैठना चाहिए। अभ्यास के एक ही स्थिति में बैठने से अवधि बढ़ती जाएगी। सिर, गर्दन और कमर सीधी रहनी चाहिये।

मंत्र जाप की माला भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसे बाएं हाथ से नहीं छुना चाहिये। हर कहीं नहीं रख देना चाहिये। इस माला को किसी भी व्यक्ति के हाथ में नहीं देना चाहिये। माला कई प्रकार की होती है। इनमें रुद्राक्ष, तुलसी, शंख, कमल बीज, मोती, स्फटिक, मणि, रत्न, चंदन, सोने, चांदी या कुश की जड़ की माला होती है। ब्राह्मण कन्या के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारा बनाये गये सूत में पिरोई गई माला सर्वोत्तम होती है। माला के दाने एक ही प्रकार के होने चाहिये। सभी प्रकार की माला में दानों की संख्या 108 होती है। माला फेरते समय अंगूठे और मध्यमा का उपयोग किया जाता है। और का स्पर्श वर्जित है। जाप के समय माला का सुमेरू (एक बड़ा दाना) पार नहीं किया जाता। इसके आ जाने पर माला को उलट कर फिर से जाप शुरू कर दिया जाता है। यदि माला टूट जाए तो पुनः गूथ लेना चाहिये। यदि गलती से कोई दाना खो जाता है तो उसी प्रकार का दूसरा दाना ले लेना चाहिये। जाप के समय माला को गोमुखी या कपड़े से ढ़ंककर रखना चाहिये। माला को जाप के समय नाभि के स्तर से ऊपर रखना चाहिये। अशुद्ध अवस्था में माला का स्पर्श नहीं करना चाहिये।

सूर्य ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्री सूर्य महामंत्रस्य श्री हिरण्यस्तूपषि त्रिष्टुप्छंदः, श्री सूर्यो देवता, श्री बीजम्, र्णी शक्तिः, सूं कीलकम्, मम् सूर्यग्रह प्रसाद पाप्तयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

ऊँ द्विभुजं पद्महस्तं च वरदं मुकुटान्वितम्।
ध्यायेद्दिवाकरं देवं सर्वाभीष्ट फल प्रदम्।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरोक्त विनियोग और ध्यान के बाद निम्न मंत्र का जाप कम से कम एक माला करना चाहिये।

ऊँ घृणिः सूर्याय नम :

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद सूर्य के 108 नामोंका उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्रजाप का प्रभाव बढता है।

सूर्य के जाप की कुल संख्या 7000 है किंन्तु कलियुग में चार गुना करने से फल प्राप्त होता है।

इसलिये 28000 जाप सूर्य के मंत्र के करने चाहिये। मंत्र जाप पूर्ण होने पर उसके दशांश का अर्थात 2800 मंत्रों से सूर्य भगवान के मंत्र से हवन करना चाहिये। हवन की समिधा में आक की लकड़ी का उपयोग करना चाहिये। हवन किसी वेदपाठी ब्राह्मण द्वारा शुभ मुहूर्त में जब अग्नि का वास पृथ्वी पर हो तब करना चाहिये। यदि जातक स्वयं 28000 जाप समय या अंन्य कारणों से नहीं कर सकें तो उसे किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा संकल्प देकर करवाना चाहिये।

सूर्य के 108 नामों को स्मरण के बाद सूर्य कवच का पाठ करने से शारीरिक पुष्टता और सुरक्षा मिलती है।

सूर्य कवच के पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना निम्न मंत्र से करनी चाहिये।

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वम् क्षम्यताम् देव प्रसिद परमेश्वर ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. यंत्र द्वारा सूर्य दोष निवारण

सूर्य ग्रह के दोष को यंत्र के द्वारा भी दूर किया जा सकता है। इसके लिये किसी शुभ मुहूर्त में सूर्य यंत्र की स्थापना की जाती है। यदि रवि पुष्य योग हो तो उत्तम मुर्हूत होता हैं। सूर्य यंत्र को स्वर्ण पत्र पर या भोज पत्र पर बनाएं। यंत्र बनाने के लिये अष्टगंध या लाल चंदन का उपयोग अनार की कलम से करना चाहिये। इस यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा करके गायत्री मंत्र से सिद्ध कर लेना चाहिये। सूर्य गायत्री मंत्र इस प्रकार है–

ऊँ आदित्याय च विद्नहें प्रभाकराय धीमहि
तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।

सूर्य का यंत्र निम्न प्रकार का है :–

6	1	8
7	5	3
2	9	4

इस यंत्र को सिद्ध करके पूजा घर में रखें और रोज उसकी पूजा करें। इस यंत्र को भोज पत्र पर बना कर कंठ या दाहिनी भुजा पर धारण करने से भी लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. व्रत– उपवास द्वारा सूर्य ग्रह दोष निवारण

सूर्य ग्रह दोष निवारण के लिये रविवार का व्रत करना चाहिये। विधान के अनुसार पौष माह के प्रथम रविवार या आश्विन माह के अन्तिम रविवार से यह व्रत प्रारंभ होता है। परन्तु यदि इन महीनों के अलावा भी अन्य किसी माह में व्रत शुरू करना हो तो शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिये। इस व्रत में रविवार को नमक का सेवन नहीं किया जाता है। दही और चावल का भोजन एक समय करना चाहिये तो उत्तम फल प्राप्त होता है। सूर्योदय के पहले ही उपवास खोल देना चाहिये। उपवास वाले दिन, दिन में नहीं सोना चाहिये। इस दिन कटु वचन न बोले, झूठ न बोलें। उपवास वाले दिन किसी की निंदा–बुराई आदि से बचें। ईर्ष्या द्वेष जैसे भाव मन में न आने दें। उपवास में पान भी नहीं खाया जाता है। उपवास वाले दिन मन में किसी भी प्रकार के विकार नहीं आने चाहिये। इसके लिये समय हो तो स्वयं को भगवत् स्मरण या सत्संग में व्यस्त रखें जिससे व्यर्थ की बातों के लिये मस्तिष्क खाली न रहें। रविवार के व्रत के समय सूर्य देव का ध्यान आराधना करते रहें। अपने आस–पास सात्विक वातावरण बना कर रखें और अपने मन को भी सात्विक रखें। इस प्रकार से रविवार का व्रत रखने से सूर्य ग्रह दोष से मुक्ति पाई जा सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. पूजा

सूर्य ग्रह दोष निवारण के लिये यदि अन्य उपायों के साथ-साथ प्रतिदिन सूर्य देव की पूजा भी की जाए तो जल्दी लाभ होता है। इसके लिये जल्दी उठकर ब्रह्ममुहूर्त अर्थात सूर्योदय से पहले दैनिक कर्म और स्नानादि से निवृत हो जाना चाहिये। अब ठीक सूर्योदय के सूर्यनारायण को जल चढ़ाना चाहिये। जिस समय सूर्य का लाल सुनहरा स्वरूप क्षितिज पर आये उसी समय जल चढ़ाना चाहिये। इस जल को एक पात्र में एकत्र करके तुलसी के पौधे में ड़ाल देना चाहिये। जल चढ़ाने के पश्चात् कुंकुम, अक्षत और पुष्प से भी सूर्य भगवान की पूजा करनी चाहिये। पूजन के बाद कुश के आसन पर बैठ कर धूप-दिप लगा कर आदित्य हृदय स्त्रोत का पाठ या बताये गये पाठ करना चाहिये। इस उपाय के करने से सूर्य ग्रहदो। का निवारण शीघ्र होता है।

6. औषधि द्वारा सूर्य ग्रह दोष निवारण

कुछ औषधियां भी इस प्रकार की है जिनसे स्नान करने पर सूर्य ग्रह दोष में वांछित लाभ प्राप्त होता है। इसके लिये मैनसिल, इलायची, देवदार, कुंकुम, उशीर, ज्येष्ठी, मधु, पद्मक, मुलेठी, केसर, रोली, खस और लाल कनेर या जवा कुमुस (गुड़हल) के फूलों के रस को मिलाकर इनके उबटन से स्नान करना चाहिये। यदि ये औषधियां पर्याप्त मात्रा में न मिले तो इनके मिश्रण को जल में मिलाकर उस जल से स्नान करना चाहिये। इससे सूर्य का दोष शांत होता है। इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नान के बाद लाल पुष्प सूर्य देव को अर्पित करना चाहिये। इन औषधियों में यदि कारणवश कोई औषधि नहीं मिले तो शेष औषधियों से भी स्नान किया जा सकता है। परन्तु संभव हो तो सभी औषधियों को उपयोग में लेना चाहिये।

6. रत्न द्वारा सूर्य ग्रह दोष निवारण

सूर्य का प्रतिनिधि रत्न माणिक है अतः सूर्य ग्रहण दोष निवारण के लिये माणिक धारण किया जाता है। इसके लिये माणिक को रविवार, सोमवार या गुरूवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। माणिक को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय पुष्य नक्षत्र होना चाहिये। यदि पुष्य नक्षत्र न हो तो कुतिका, उत्तरा फाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में भी यह कार्य किया जा सकता है। माणिक कम से कम तीन रत्ती का होना चाहिये। आडे–तिरछे कट के एवं खण्ड़ित, असमान माणिक नहीं होना चाहिये। माणिक को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहे। इस अंगूठी को प्रातः रविवार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को कुछ समय तक (लगभग आधे घण्टे) गाय के कच्चे दूध में डुबो कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। यदि गंगा जल उपलब्ध न हो तो तांबे के पात्र में बारह घंटों तक रखा जल उपयोग में लिया जा सकता है। जल से धोने के बाद अंगूठी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को एक लाल कपड़े पर रखें जिस पर लाल चंदन से सूर्य यंत्र बनाया गया हो। यदि व्यवस्था हो सके तो चांदी के 50 ग्राम के आसन पर तांबे का सूर्य यंत्र या सोने की सूर्य देव की प्रतिमा स्थापित की जा सकती है। यंत्र और प्रतिमा की पूजा धूप–दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करे। अब निम्न मंत्र का 108 बार जाप करें:–

"ॐ घृणिः सूर्याय नम"

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें सूर्य देव का वास समझकर अनामिका अंगुलि में धारण करें। यंत्रों को पूजाघर में रखे या फिर किसी ब्राह्मण को दान कर दें। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस सिद्ध की हुई अंगूठी के धारण करने से सूर्य ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

7. माणिक का विकल्प

माणिक एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। माणिक के स्थान पर गारनेट, लाल स्पाइनल, लाल जिरकॉन या लाल टूर्मेलिन का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनकों खरीदना भी संभव नहीं है तो सफेद आक या बेल की जड़ का उपयोग भी किया जा सकता है। इनकों खरीदने लाने का समय माणिक के अनुसार ही है तथा इनकी पूजन तथा धारण विधि भी माणिक के अनुसार ही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. दान द्वारा सूर्य ग्रह दोष निवारण

सूर्य ग्रह दोष निवारण के लिय प्रातः काल सूर्योदय के समय किसी योग्य ब्राह्मण को दान करना चाहिये। दान की वस्तुओं में गेहुँ, तांबा, गुड, खस, लाल पुष्प, लाल कपड़ा, सोना, घी, लाल चंदन, माणिक, लाल गाय एवं सूर्य यंत्र शामिल है। यह दान रविवार को करना चाहिये। यदि रवि पुष्य या रवि पुनर्वसु योग हो तो अधिक उत्तम है। इन वस्तुओं में से अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करना चाहिये वैसे इनमें गेहुँ स्वयं के वनज के बराबर होना चाहिए। शेष वस्तुएँ श्रद्धा अनुसार किन्तु उचित मात्रा में होना चाहिये साथ में श्रद्धानुसार दक्षिणा भी होनी चाहिये। जिससे निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होगा।

दान की विधि

उपरोक्त वस्तुओं में से थोड़ा–थोड़ा जैसे गेहुँ के कुछ दाने, एक लाल पुष्प, घी, की एक बुंद इत्यादि तथा दक्षिणा हाथ में रखकर संकल्प करना चाहिये। संकल्प होने के बाद समस्त वस्तुओं को हाथ लगाकर ब्राह्मण या उपर्युक्त व्यक्ति को देनी चाहिये। साथ में अपनी श्रद्धानुसार दक्षिणा व इन सब चीजों की व्यवस्था का खर्च भी जातक को स्वयं करना चाहिये।

9. भाव के अनुसार उपाय

सूर्य के प्रत्येक भाव के लिय भी अलग–अलग उपाय अपनाये जा सकते है। इनकी संक्षिप्त जानकारी यहां दी जा रही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. प्रथम भाव में सूर्य

सूर्य प्रथम भाव में है और सूर्य ग्रहदोष का कष्ट है तो यदि जातक अविवाहित है तो उसका विवाह कर देना चाहिये। सार्वजनिक उपयोग के जल स्थान जैसे :–प्याऊ, कुंआ या पशुओं और पक्षियों के पीने के पानी की व्यवस्था करनी चाहिये।

2. द्वितीय भाव में सूर्य

सूर्य के द्वितीय भाव में होने पर कभी भी गेहुँ और बाजरा मुफ्त में नहीं लेना चाहिये। नारियल, बादाम या तेल का दान धर्म स्थानों पर करते रहना चाहिये।

3. तृतीय भाव में सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य होने पर भतीजों की सेवा–सहायता करना चाहिये।

4. चतुर्थ भाव में सूर्य

यदि सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है तो अंधों को भिक्षा देना चाहिये। साथ ही बुआ के लड़के की मदद करना चाहिये।

5. पंचम भाव में सूर्य

यदि सूर्य पंचम भाव में है तो लाल मुंह के बंदर की सेवा करना चाहिये।

6. षष्ठम भाव में सूर्य

षष्ठम भाव में सूर्य होने पर बंदर को गुड देना चाहिये। मामा की सेवा सहायता करना चाहिये। घर में किसी पवित्र नदी या तीर्थ का जल रखें। मन्दिर में दाने दें। रात को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिरहाने पानी रख कर सोये।

7. सप्मम भाव में सूर्य

यदि सप्तम भाव में सूर्य है तो सूर्य ग्रह दोष निवारण के लिय काली गाय की सेवा करना चाहिये। जमीन में तांबे के चौकोर पत्र गाड़ने से लाभ होगा। कोई भी काम शुरू करने के पहले एक घुट पानी पी लेना चाहिये।

8. अष्टम भाव में सूर्य

यदि सूर्य अष्टम भाव में हो तो लाल या काली गाय की सेवा करना चाहिये। कोई भी काम गुड़ खाकर पानी पीकर शुरू करना चाहिये। गेहुं 800 ग्राम और गुड़ 800 ग्राम दोनों रविवार से शुरू करके लगतार आठ दिनों तक मन्दिर में दान करना चाहिये।

9. नवम भाव में सूर्य

यदि सूर्य नवम भाव में है तो सूर्य दोष निवारण के लिये चांदी, चावल या दूध का दान करना चाहिये परन्तु इन वस्तुओं का दान कभी नहीं लेना चाहिये।

10. दशम भाव में सूर्य

यदि सूर्य दशम भाव में स्थित है तो सूर्य दोष निवारण के लिये सिर पर सफेद टोपी या पगड़ी हमेशा पहनना चाहिये। काले और नीले कपड़े नही पहनना चाहिये। नदी या तालाब में तांबे का पैसा ड़ालना चाहिये।

11. एकादश भाव में सूर्य

एकादश भाव में सूर्य होने पर तांबे का दान करने से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य दोष निवारण होता है।

12. द्वादश भाव में सूर्य

यदि द्वादश भाव में सूर्य है तो बंदरों को गुड़ खिलाना चाहिये। अपने धर्म पर स्थिर रहना चाहिये और कभी भी झूठी गवाही नहीं देनी चाहिये। साले, चाचा और ताऊ के साथ मिलकर काम नही करना चाहिये। लाल चीटिंयों को आटा ड़ालना चाहिये।

उपरोक्त उपाय बारह भावों के अनुसार है। इनका पालन करके भी सूर्य ग्रह दोष का निवारण किया जा सकता है।

11. अन्य उपाय

1. सूर्य से संबंधित वस्तुओं का दान कभी भी नहीं लेना चाहिये।

2. रविवार के दिन बहते जल मे तांबे का सिक्का बहाना चाहिये।

3. रविवार के दिन लाल गाय को रोटी और गुड़ खिलाना चाहिये।

4. रविवार को बहते पानी में गुड़ बहाना चाहिये। अपनी जेब में हमेशा तांबे का एक टुकड़ा रखें। शुक्ल पक्ष के रविवार को तांबे की अंगूठी धारण करें। सदाचारी और सात्विक बनें रहे।

5. रात का भोजन बन जाने के बाद चूल्हे की आग दूध से बुझाएं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. प्रतिदिन सूर्योदय से पहले जाग कर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर बेल की जड़ का टुकड़ा बना कर उसे जल में मिलाकर स्नान करें।

7. सिर पर लाल चंदन का तिलक करें।

8. भोजन में गुड़, लाल देशी गेहुं और लाल गाय का दूध–घी लेना चाहिये।

9. स्नान में साबुन का त्याग करना चाहिये।

10.पिता, चाया, ताऊ या किसी पितृ तुल्य व्यक्ति की सेवा करनी चाहिये।

11. प्रतिदिन 7 पान दान करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – चंद्र

चंद्र, कर्क राशि का स्वामी है। इसका मूल त्रिकोण वृषभ का होता है। वृषभ राशि में यह उच्च का तथा वृश्चिक राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग सफेद है। इसकी जाति वैश्य है। चंद्र की दिशा वायव्य और धातु काँसा है। यह स्त्री ग्रह है। इसका तत्व जल है। इसकी प्रतिनिधि ऋतु वर्षा है। प्रतिनिधि पशु वेत रंग का बैल है। यह सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। चंद्र के मित्र ग्रह सूर्य और बुध है। इसका शत्रु ग्रह राहु है। मंगल, गुरू, शुक्र एवं शनि ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर में चंद्र की स्थिति मुख के स्थान पर है। चंद्र ग्रह के लिये भाव का कारक तत्व चतुर्थ भाव है। चंद्र एक राशि में सवा दो दिन तक रहता है। चंद्र ग्रह का स्वभाव सामान्यतः शुभ माना जाता है। चंद्रमा का गुण सत्व है।

चंद्र स्व स्थित राशि से द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, नवम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही चंद्र की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यह अनुभव सिद्ध है। यहां चंद्र की अनिष्टता के निवारणार्थ कतिपय प्रमुख उपाय प्रस्तुत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1.मंत्रों और स्त्रोतों का जाप

चंद्र द्वारा उत्पन्न पीड़ा का शांत करने के लिये पीड़ित जातक को श्रद्धापूर्वक नित्य चंद्रमा के मंत्रो और स्त्रोतों का जाप करना चाहिये। विनियोग तथा ध्यान इस प्रकार है।

चंद्र ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्री आप्यायस्वेतिसोममहामन्त्रस्य श्री गौतम ऋषिः। गायत्री छनदः। श्रीसोमो देवता। सां बीजम्। सीं शक्तिः। सूं कीलकम्ः। मम श्रीसोमदेवताप्रसादप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

ऊँ गदायुधधरं देवं वेतवर्ण निशाकरम्।
ध्यायेदम तसंभूतं सर्वकामफलप्रदम्।।

उपरोक्त विनियोग और ध्यान के बाद निम्न मंत्र का जाप मोती की माला से कम से कम एक माला रोज करना चाहिये।

ऊँ सों सोमाय नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र और जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद चंद्र के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्रजाप का प्रभाव बढ़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्रमा के मंत्र की जाप संख्या 11,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करने या करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 44,000 हजार जाप तथा उसके दस अंश अर्थात 4,400 मंत्र से चंद्रमा के मंत्र का हवन करना चाहिये। चंद्रमा हवन के लिये उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करना चाहिये तथा अग्निवास भी पृथ्वी पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित या आचार्य के द्वारा भी संकल्प द्वारा करवाये जा सकते है।

चंद्र के 108 नामों के स्मरण के बाद चंद्र कवच का पाठ करने से शारीरिक पुष्टता और सुरक्षा मिलती है।

चंद्र कवच के पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वम् क्षम्यताम् देव पसीद परमेश्वर।।

2. यंत्र द्वारा चंद्र दोष निवारण

इस मंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर कंठ में अथवा दाई भुजा में भी धारण कर सकते है।

ऊँ अम ताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि
तन्नो सोमः प्रचाद्यात्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्र का यंत्र निम्न प्रकार का है –

7	2	9
8	6	4
3	10	5

3. व्रत–उपवास द्वारा चंद्र ग्रह दोष निवारण

सोमवार का व्रत करने से भी जातक को चंद्रकृत दोषों से मुक्ति मिलती है। शुक्ल पक्ष से सोमवार से यह व्रत प्रारंभ करे और कम से कम सोलह व्रत करें। व्रत के दिन प्रातः काल पूजा आराधना के उपरांत दुग्ध पान कर सकते है तथा सांयकाल एक समय फलाहार कर लेना चाहिये अथवा नमकरहित भोजन भी कर सकते है। भोजन में वेत वस्तुओं को प्रमुखता दें। सांयकाल शिव मंदिर में जाना चाहिये और शिवजी की आराधना व समय हो तो थोड़ी देर वहां बैठकर ध्यान या पाठ करना चाहिये।

4. औषधि द्वारा चंद्र ग्रह दोष निवारण

चंद्र दोष से पीड़ित जातक को नित्य पंचगव्य से स्नान करना अत्यंत लाभदायक है। पंचगव्य में गाय के दूध, दही, घी, गोबर तथा मूल का मिश्रिण होता है। इसके अतिरिक्त स्नान के जल मे फिटकरी, सफेद चंदन, हाथी का मद आदि भी मिला लिया जाए, तो भी श्रेष्ठ परिणाम दृष्टिगोचर होता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। उक्त सामग्रियों से यदि नित्य स्नान, न कर सकें, तो सोमवार को अवश्य ही करना चाहिये।

5. रत्न द्वारा चंद्र ग्रह दोष निवारण

चंद्रमा का प्रतिनिधि रत्न मोती है अतः चंद्र दोष निवारण के लिये मोती धारण किया जाता है। इसके लिये मोती को सोमवार या गुरूवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। मोती को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय पुष्य नक्षत्र होना चाहिये। यदि पुष्य नक्षत्र न हो तो रोहिणी, हस्त और श्रवण नक्षत्र में भी यह कार्य किया जा सकता है। मोती कम से कम तीन रत्ती का होना चाहिये। आड़े–तिरछे कट के एवं खंड़ित, असमान मोती नहीं होना चाहिये। मोती को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहें। इस अंगूठी को सायः काल के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को कुछ समय तक (लगभग आधे घंटे) गाय के कच्चे दूध में डुबा कर रखना चाहिये। दूध मे से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। यदि गंगा जल उपलब्ध न हो तो चांदी के पात्र में बारह घंटों तक रखा जल उपयोग में लिया जा सकता है। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक सफेद कपड़े पर रखें जिस पर सफेद चंदन से चंद्र यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप, दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब निम्न मंत्र का 108 बार जाप करें–

ऊँ सों सोमाय नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें चंद्र देव का वास समझकर अनामिका अंगुलि में धारण करना चाहिये। यंत्रों को पूजाघर में रखना चाहिये या फिर किसी ब्राह्मण को दान कर देना चाहिये। इस अंगुठी के धारण करने से चंद्र ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

6. मोती का विकल्प

मोती एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। मोती के स्थान पर सफेद मुक्ता, मुनस्टोन व चंद्रमणि का प्रयोग भी किया जा सकता है। यदि इनकों खरीदना भी संभव नहीं है तो फ्लाश की जड़ का उपयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय मोती के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी मोती के अनुसार ही है।

7. दान

विधिपूर्वक मोती सहित, चंद्र की वस्तुओं का दान करने से भी गोचरवश तथा अन्य प्रकार से दोषपूर्ण चंद्र की शांति होती है। सोमवार को शुभ समय में सुपात्र को निम्नलिखित वस्तुओं का दान करें। सफेद चीनी अथवा मिश्री, श्वेत शंख, वेत वस्त्र, चावल, घी, दही, कर्पूर तथा यथासंभव चांदी का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी दान करे। प्राणप्रतिष्ठित चंद्र यंत्र का दान करने से भी चंद्राकृत अरिष्टों की शांति होती है। इसमें चावल व सफेद चीनी की मात्रा जातक के वनज के बराबर होनी चाहिये। शेष वस्तु श्रद्धानुसार होनी चाहिये। दान के साथ उपर्युक्त दक्षिणा भी होनी चाहिये।

8. भाव के अनुसार उपाय

चंद्र के प्रत्येक भाव के लिये भी अलग-अलग उपाय अपनाये जा सकते है। इनकी संक्षिप्त जानकारी नीचे दी जा रही है।

1. प्रथम भाव में चंद्रमा

चंद्र के प्रथम भाव में होने पर जातक को बड़ के वृक्ष की जड़ में पान डालने से चंद्र का अच्छा प्रभाव प्राप्त होता है।

2. द्वितीय भाव में चंद्रमा

चंद्र के द्वितीय भाव में होने पर दूध एवं चावल मंदिर में देना चाहिये। माता की आज्ञा का पालन करने से चंद्र शुभ फलदायी हो जाता है। दीर्घायु के लिये माता से चांदी, चावल लेकर सफेद कपड़े में बांध कर संभाल कर रखें। मकान की बुनियाद में चांदी का पतरा गाड़ने से भी चंद्रमा के फल में शुभत्व की प्राप्ति होती है।

3. तृतीय भाव में चंद्रमा

चंद्र के तृतीय भाव में होने पर जातक को चंद्रमा की वस्तुओं का दान करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. चतुर्थ भाव में चंद्रमा

यदि चंद्र चतुर्थ भाव में स्थित है तो दूध के दान से वृद्धि होती है।

5. पंचम भाव में चंद्रमा

यदि चंद्र पंचम भाव में है तो सोमवार को सफेद कपडें में चावल, मिश्री बांधकर बहते पानी में बहाना चाहिये। शिवजी को नित्य पुष्प चढ़ाने चाहिये।

6. षष्ठम भाव में चंद्रमा

षष्ठम भाव में चंद्र होने पर दूध का दान नहीं करना चाहिये तथा अस्पताल में प्याऊ लगवाना चाहिये।

7. सप्तम भाव में चंद्रमा

यदि सप्तम भाव में चंद्र है तो दूध तथा पानी नहीं बेचना चाहिये।

8. अष्टम भाव में चंद्रमा

यदि चंद्र अष्टम भाव में है तो सोने में मोती पहनना चाहिये।

9. नवम भाव में चंद्रमा

यदि चंद्र नवम भाव में है तो पूर्णिमा को चंद्रमा की रोशनी में दूध को रखकर पीना चाहिये।

10. दशम भाव में चंद्रमा

यदि चंद्र दशम भाव में स्थित हो तो जातक को रात को दूध नहीं पीना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. एकादश भाव में चंद्रमा

एकादश भाव में चंद्र होने पर चांदी में मोती पहनने से लाभ मिलता है।

12. द्वादश भाव में चंद्रमा

यदि द्वादश भाव में चंद्र है तो वर्षा का पानी घर में रखना चाहिये।

उपरोक्त उपाय बारह भावों के अनुसार है। इनका पालन करके भी चंद्र ग्रहदोष का निवारण किया जा सकता है।

अन्य उपाय

1. पानी की टंकी की सफाई का विशेष ध्यान रखना।
2. गंगा, यमुना या अन्य पवित्र नदीं मे स्नान करें।
3. घर की पूज्य स्त्रियों (माता, दादी, नानी) स्त्रियों से आशीर्वाद प्राप्त करें।
4. चांदी की अंगूठी पहने।
5. रात्रि के समय दूध न पीये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – मंगल

मंगल, मेष एवं वृश्चिक राशि का स्वामी है। इसका मूल त्रिकोण मेष का होता है। मकर राशि में यह उच्च का तथा कर्क राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग लाल है। इसकी जाति क्षत्रिय है। मंगल की दिशा दक्षिण और ध ातु तांबा एवं सोना है। यह पुरूष ग्रह है। इसका तत्व अग्नि है। इसकी प्रतिनिधि ऋतु ग्रीष्म है। प्रतिनिधि पशु लाल रंग का बैल है। यह चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। मंगल के मित्र ग्रह सूर्य एवं गुरू है। इसका शत्रु ग्रह शनि, बुध एवं राहु है। शुक्र एवं शनि ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर में मंगल की स्थिति भुजा के स्थान पर है। मंगल ग्रह के लिये भाव का कारक तत्व तृतीय व षष्ठ भाव है। मंगल एक राशि में डेढ़ महिनें तक रहता है। मंगल ग्रह का स्वभाव क्रुर माना जाता है। मंगल ग्रह का गुण तमोगुण है।

मंगल चंद्र राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही मंगल की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यह अनुभव सिद्ध है। यहां मंगल की अनिष्टता के निवारणार्थ प्रमुख उपाय निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. मंत्रो और स्त्रोतों का जाप

मंगल द्वारा उत्पन्न पीड़ा को शांत करने के लिये व्यक्ति को मंगल के मंत्रों का जाप करना लाभदायक होता है। इसे मंगलवार से तथा शुभ मुहूर्त से ही प्रारंभ करना चाहिये।

मंत्र जाप के लिये प्रातः काल का समय अच्छा होता है। इसके अलावा तीनों संध्या काल (सूर्योदय, दोपहर 12 बजे, सूर्यास्त) के समय भी उपयुक्त रहते है। प्रतिदिन किसी एक निश्चित समय पर जाप करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्री अङ्गारकमहामनत्रस्य विरूपाक्ष
ऋषिः, गायत्री छंदः, अङ्गारको देवता, ममश्री
अङ्गारकप्रीत्यर्थे विनियोगः।।

ध्यान

ऊँ श्री रक्तमाल्यांबरधंर हेमरूपं चतुर्भुजम्।
शक्तिशूलगदापद्म धरन्तं स्वकरांबुजैः।।
मेषारूढ़ं त्रिकोणस्थं भावयेद्धरणीसुतम्।।

ध्यान के उपरांत मंगल ग्रह का मानसिक रूप से पूजन करना चाहिये तथा भावपूर्वक जाप करना चाहिये।

ऊँ अं अंगारकाय नमः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र जाप के प्रभावों में वृद्धि करने के लिये माला के बाद मंगल के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्र जाप का प्रभाव बढ़ता है।

मंगल के मंत्र की जाप संख्या 10,000 है। कलियुग में चार गुना करने या करवान से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 40,000 हजार जाप तथा उसके दस अंश अर्थात 4,000 मंत्र से मंगल के मंत्र का हवन करना चाहिये। मंगल हवन के लिये उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करना चाहिये तथा अग्निवास भी पृथ्वी पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य के द्वारा भी संकल्प द्वारा करवाये जा सकते है।

मंगल के 108 नामों के स्मरण के बाद मंगल कवच का पाठ करने से शारीरिक पुष्टता और सुरक्षा मिलती है।

मंगल कवच के पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

यदक्षरं पदभ्रष्ट मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वम् क्षम्यताम् देव प्रसीद परमेश्वरम्।।

2. यंत्र द्वारा मंगल दोष निवारण

भौमाश्विनी योग में अथवा अन्य किसी भी शुभ योग में ताम्र पत्र में इस मंगल यंत्र को उत्कीर्ण कराएं। मध्य में मूंगा जड़वाकर मंगल गायत्री से 108 बार जप करके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतिष्ठित कर ले और नित्य पूजा गृह में स्थापित करके पूजा करनी चाहिये। यदि शारीरिक पीड़ा अधिक है, तो इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर कंठ या दाहिनी भुजा में भी धारण कर सकते है अथवा तांबे की अंगूठी पर मंगल यंत्र खुदवाएं और शुद्ध करके अनामिका अंगुली में धारण कर ले।

"ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि
तन्नो भौमः प्रचोदयात्।"

मंगल का यंत्र निम्न प्रकार है:-

7	2	9
8	6	4
3	10	5

3. व्रत- उपवास द्वारा मंगल ग्रह दोष निवारण

मंगल ग्रह मंगलवार का स्वामी है, अतः उसकी प्रसन्नता के लिये मंगलवार का व्रत जातक को करना चाहिये। व्रत के दिन स्नानादि के उपरांत हनुमान जी के दर्शन करें तथा सांयकाल उन्हें भोग लगाकर एक समय नमक रहित मीठा भोजन करना चाहिये। यह ध्यान रहें कि उस दिन क्रोध न आए और किसी विद्वान पुरूष का अपमान न हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. औषधि द्वारा मंगल ग्रह दोष निवारण

मंगल ग्रह के दोष से पीड़ित जातक को रक्त चंदन, बेल की छाल, जटामासी, सिहरफ, खिरेटी तथा गुड़ एवं हींग आदि पदार्थो से युक्त जल के द्वारा, मंगलवार को आवश्यक रूप से स्नान करना चाहिये। इन वस्तुओं का दूसरों को उपयोग करने के लिये भी हितकारी होता है।

5. रत्न द्वारा मंगल दोष निवारण

मंगल का प्रतिनिधि रत्न मूंगा है अतः मंगल दोष निवारण के लिये मूंगा धारण किया जाता है। इसके लिये मूंगा को सोमवार या गुरूवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। माणिक को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय पुष्य नक्षत्र होना चाहिये। यदि पुष्य नक्षत्र न हो तो मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्र में भी यह कार्य किया जा सकता है। मूंगा कम से कम तीन रती का होना चाहिये। आड़े–तिरछे कटा एवं खंड़ित, असमान माणिक नहीं होना चाहिये। मूंगा को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहे। इस अंगूठी को प्रातः काल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को कुछ समय तक (लगभग आधे घंटे) गाय के दूध में डुबा कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। यदि गंगा जल उपलब्ध न हो तो तांबे के पात्र में बारह घंटों तक रखा जल उपयोग में लिया जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जल से धोने के बाद अंगूठी को एक लाल कपड़े पर रखें जिस पर लाल चंदन से मंगल यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप–दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करनी चाहिये। उसके पश्चात निम्न मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।

ऊँ अं अंगारकाय नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें मंगल देव का वास समझकर अनामिका अंगुलि में धारण करना चाहिये। यंत्रों को पूजाघर में रखना चाहिये या फिर किसी ब्राह्मण को दान करना चाहिये। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के धारण करने से मंगल ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

6. मूंगे का विकल्प

मूंगा एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। मूंगा के स्थान पर लाल स्फटीक, लाल तामड़ा तथा लाल जिरकॉन का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनकों खरीदना भी संभव नहीं है तो खेर की जड़ का उपयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय मूंगे के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी मूंगे के अनुसार ही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. दान

दान करने से भी ग्रह की अनिष्टता दूर होती है, अतः निम्नलिखित वस्तुओं को यथाशक्ति सुपात्र व्यक्ति को दान करना चाहिये – मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चंदन, मसूर की दाल, गुड़, कस्तूरी तथा दक्षिणा आदि। यदि दान किसी अविवाहित ब्राह्मण को दिया जाय तो यह श्रेष्ठ है। अधिक पीड़ा के समय विधिवत् प्राण प्रतिष्ठित मंगल यंत्र का दान भी कल्याणकारी होता है।

8. भाव के अनुसार उपाय

मंगल के प्रत्येक भाव के लिये भी अलग–अलग उपाय अपनाये जा सकते है। इनकी संक्षिप्त जानकारी नीचे दी जा रही है।

1. प्रथम भाव में मंगल

मंगल के प्रथम भाव में होने पर सौंफ का प्रयोग करना चाहिये।

2. द्वितीय भाव में मंगल

मंगल के द्वितीय भाव मे होने पर रेवड़ियां एवं पतासे बहते पानी में बहायें। भाइयों या मित्रों की सहायता से करना चाहिये।

3. तृतीय भाव में मंगल

मंगल के तृतीय भाव में होने पर हाथी दांत (अगर उपलब्ध हो तो) घर में रखना चाहिये। ताऊजी की सेवा भी शुभ फल प्राप्त होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. चतुर्थ भाव में मंगल

यदि मंगल चतुर्थ भाव मे स्थित है तो तीन धातु (सोना, चांदी, तांबे) की अंगूठी पहने। दूध में धोकर चावल कम से कम 7 मंगलवार के दिन बहते पानी में बहाये तो शुभ फल की प्राप्ति होगी।

5. पंचम भाव में मंगल

यदि मंगल पंचम भाव में हो तो रात को सोते समय सिरहाने पानी रख कर सोये। सुबह उस पानी को पौधों में ड़ाल दें।

6. षष्ठम भाव में मंगल

षष्ठम भाव में मंगल होने पर चांदी या चावल का दान दिया जाये।

7. सप्तम भाव में मंगल

यदि सप्तम भाव में मंगल है तो बुआ एवं बहिन को लाल कपड़े देना चाहिये। स्नान करके लाल कपड़े पहने और तांबे का बर्तन चावलों से भरकर चंदन का लेप लगाकर हनुमान मंदिर में देना चाहिये।

8. अष्टम भाव में मंगल

यदि मंगल अष्टम भाव में है तो सिक्की हुई तन्दुरी रोटियां कुत्तो को ड़ाले। चांदी गले मे पहने।

9. नवम भाव में मंगल

यदि मंगल नवम भाव में है तो मंगलवार के दिन हनुमान जी को सिन्दुर चढ़ाये एवं भोग लगाये। सोने में मूंगा धारण करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. दशम भाव में मंगल

यदि मंगल दशम भाव मे स्थित है तो हनुमान जी के मंदिर में नित्य सेवा तथा दर्शन से लाभ प्राप्त होगा। सुंदरकांड के पाठ से भी शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

11. एकादश भाव में मंगल

एकादश भाव में मंगल होने पर काला–सफेद कुत्ता पालना, हनुमान जी को सिन्दुर चड़ाना भी शुभ फलों की प्राप्ति कराता है।

12. द्वादश भाव में मंगल

यदि द्वादश भाव में मंगल है तो सबको मीठा खिलाना चाहिये। मंगलवार के दिन हनुमानजी के मन्दिर में जाकर लड्डू बांटने चाहिये।

अन्य उपाय

1. शहद, सिन्दुर तथा मसूर की दाल को बहते पानी में प्रवाहित करें।

2. बडे भाई और भाभी का सम्मान करें।

3. लाल रंग का तौलिया तथा रूमाल उपयोग में लाये।

4. दूध को उफान कर भूमि पर नहीं गिरने दे।

5. लाल रंग के छोटे से रूमाल में सौंफ बांधकर शयनकक्ष में रख लें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – बुध

बुध, मिथुन एवं कन्या राशि का स्वामी है। इसका मूल त्रिकोण कन्या का होता है। कन्या राशि में यह उच्च का तथा मीन राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग हरा है। इसकी जाति शूद्र है। बुध की दिशा उत्तर और धातु कास्यं है। यह स्त्री, नपुसंक लिंग ग्रह है। यह पृथ्वी तत्व का ग्रह है। इसकी प्रतिनिधि ऋतु शरद है। प्रतिनिधि पशु गौ है। यह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। बुध के मित्र ग्रह सूर्य और शुक्र हे। इसका शत्रु ग्रह चंद्रमा है। मंगल, गुरू एवं शनि ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर में बुध की स्थिति नाभि के स्थान पर है। बुध चतुर्थ एवं एकादश भाव का कारक ग्रह है। बुध एक राशि में एक माह (करीब 21 से 30 दिन) तक रहता है। बुध ग्रह का स्वभाव सौम्य माना जाता है। बुध ग्रह का गुण रजोगुण है।

बुध ग्रह स्थित राशि से प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही बुध की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां बुध की अनिष्टता के निवारणार्थ कतिपय प्रमुख उपाय प्रस्तुत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. मंत्रो और स्त्रोतो का जाप

बुध ग्रह की अनिष्टता का निवारण करने के लिये जातक को बुध मंत्र का जाप कल्याणकारी होता है।

बुध ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्री श्रीबुणमहामन्त्रस्य श्रीकश्यप ऋषिः।
त्रिष्टुप्छंदः, श्रीबुधोदेवता, श्री बुधग्रहप्रीतिप्राप्तयर्थे जपे विनियोगः।।

ध्यान

ऊँ सिंहारूढ़ं चतुर्बाहुं खड्गचर्मगदाधाम्।
सोमपुत्रं महासौम्यं ध्यायेत्सर्वाथसिद्धिद्म्।।

इसके उपरांत बुध ग्रह की मानस पूजा के बाद निम्नलिखित मंत्र का कम से कम एक माला जाप करना चाहिये।

ऊँ बुं बुधाय नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद बुध के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्र जाप का प्रभाव बढ़ता है।

बुध के मंत्र की जाप संख्या 17,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करने या करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 68,000 हजार जाप तथा उसक दस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंश अर्थात 6800 मंत्र से बुध के मंत्र का हवन करना चाहिये। बुध हवन के लिये उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करना चाहिये तथा अग्निवास भी पृथ्वी पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य द्वारा भी संकल्प द्वारा करवाये जा सकते है।

बुध कवच के पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

2. यंत्र द्वारा बुध दोष निवारण

बुध जनित पीड़ा के यंत्रात्मक उपचार के लिये जातक को बुध का यंत्र विधिपूर्वक धारण कर लेना चाहिये तथा चांदी के चौकोर पत्र पर बुधवार के दिन बुध के नक्षत्र में निम्नलिखित यंत्र उत्कीर्ण कराएं एवं उसके मध्य में स्वच्छ तथा आकर्षक पन्ना जड़वाकर बुध गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर पूजा में रखना चाहिये।

ॐ सौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय च धीमहि तन्नो
सौम्यः प्रचोदयात्।

बुध का यंत्र निम्न प्रकार है :-

9	4	11
10	8	6
5	12	7

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. व्रत– उपवास द्वारा ग्रह दोष निवारण

बुधवार को जातक को व्रत करना चाहिये। प्रातः काल भगवान गणपति के दर्शन कर लड्डु का भोग लगाएं। व्रत के दिन गाय को दूर्वा खिलाए। एक समय नमकरहित भोजन करें। व्रत को निरंतर कम से कम 27 दिन (बुधवार) करना चाहिये। नवरात्र के बुधवार से व्रत करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

4. औषधि द्वारा बुध ग्रह दोष निवारण

बुध ग्रह से पीड़ित जातक को बुधवार को स्नान करते समय जल में जायफल, फीरामूल, गाय के गोबर तथा अक्षत आदि मिलाकर स्नान करना चाहिये।

5. रत्न द्वारा बुध ग्रह दोष निवारण

बुध का प्रतिनिधि रत्न पन्ना है, अतः बुध दोष निवारण के लिये पन्ना धारण करना चाहिये। इसके लिये पन्ने को रविवार, सोमवार, या गुरूवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। पन्ने को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने में आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र में भी यह कार्य किया जा सकता है। पन्ना कम से कम तीन रती का होना चाहिये। आडे–तिरछे कट के एवं खंड़ित, असमान पन्ना नहीं होना चाहिये। पन्ने को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर का स्पर्श करता रहें। इस अंगूठी को प्रातः काल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को कुछ समय तक (लगभग आधे घंटे) गाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कच्चे दूध में डुबा कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक हरे कपड़े पर रखें जिस पर चंदन से बुध यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप-दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करना चाहिये। उसके पश्चात निम्न मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये-

ऊँ बुं बुधाय नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें बुध का वास समझकर कनिष्टिका अंगुलि में धारण करना चाहिये। यंत्रों को पूजाघर में रखे या फिर किसी ब्राह्मण को दान करे दे। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के धारण करने से बुध ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

पन्ने का विकल्प

पन्ना एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का प्रयोग किया जा सकता है। पन्ने के स्थान पर ओनेक्स, हरा जिरकॉन आदि का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनको खरीदना भी संभव नहीं है तो अपमर्गा का उपयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय पन्ने के समान ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी पन्ने के अनुसार ही है।

दान

जातक को बुधवार के दिन हरे मूंग अथवा मूंग के लड्डुओं का दान करना चाहिये। बुधवार के दिन किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुपात्र को निम्नलिखित वस्तुओं का दान करना चाहिये।

हरा मूंग, हरे वस्त्र, मूंगा, कांसा, घी, शक्कर, शहद, गोरोचन तथा दक्षिणा श्रद्धानुसार।

भाव के अनुसार उपाय

1. प्रथम भाव मे बुध

बुध के प्रथम भाव में हो तो किसी से भी अनैतिक व्यवहार न करें।

2. द्वितीय भाव मे बुध

बुध के द्वितीय भाव में होने पर कुवारी कन्या को नित्य भोजन करवाना चाहिये।

3. तृतीय भाव में बुध

बुध के तृतीय भाव में होने पर बुधवार के दिन बकरी का दान करें।

4. चतुर्थ भाव मे बुध

यदि बुध चतुर्थ भाव में स्थित है तो 43 दिन तक लगातार केसर का तिलक लगाये।

5. पंचम भाव मे बुध

यदि बुध पंचम भाव में है तो चांदी लाभप्रद ।

6. षष्ठम भाव में बुध

षष्ठम भाव में बुध हो तो किसी भी कार्य पर जाते समय फूल साथ ले जाये।

7. सप्तम भाव में बुध

यदि सप्तम भाव में बुध है तो काले रंग की भोंड़ी गाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की सेवा करनी चाहिये।

8. अष्टम भाव में बुध

यदि बुध अष्टम भाव में है तो देवी तथा कन्या पूजन व सेवा से लाभ प्राप्त होगा।

9. नवम भाव में बुध

यदि बुध नवम भाव में है तो पील केसर का तिलक लगायें। लाल गाय को रोटी देना भी अच्छा प्रभाव देगा।

10. दशम भाव में बुध

यदि बुध दशम भाव में स्थित है तो गाय को नित्य घास ड़ालें।

11. एकादश भाव में बुध

एकादश भाव में बुध होने पर बुआ एवं छोटी कन्याओं को भोजन कराये।

12. द्वादश भाव में बुध

यदि द्वादश भाव में बुध है तो काला सफेद कुत्ता पालना शुभ है। गणेश जी की पूजा विशेष फलदायक रहेगी।

अन्य उपाय

1. हरे रंग के वस्त्र एवं चूड़ियां हिजड़ों को दान दे।
2. सिक्के में छेद करके पानी में बहाए।
3. कन्याओं का पूजन करें और आर्शीवाद लें।
4. घर में तुलसी का पौधा आरोपित करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – गुरू

गुरू, धनु एवं मीन राशियों का स्वामी है। इसमा मूल त्रिकोण धनु का होता है। कर्क राशि में यह उच्च का तथा मकर राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग पीला है। इसकी जाति ब्राह्मण है। गुरू की दशिा उत्तर–पूर्व और धातु स्वर्ण है। यह पुरूष ग्रह है। यह आकाश तत्व का ग्रह है। इसकी प्रतिनिधि ऋतु हेमन्त है। प्रतिनिधि पशु अश्व है। यह पंचम, सप्तम तथा नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरू के मित्र ग्रह सूर्य, चंद्रमा, एवं मंगल हैं इसका शत्रु ग्रह बुध एवं शुक्र है। शनि ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर में गुरू की स्थिति नासिका के स्थान पर है। गुरू ग्रह के लिये भाव का कारक तत्व द्वितीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भाव है। गुरू एक राशि में तेरह माह तक रहता है। गुरू ग्रह का स्वभाव शुभ एवं सौम्य है। गुरू का सत्व गुण है।

गुरू चंद्र स्थित राशि में प्रथम, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, एकादश एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायो का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही गुरू की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां गुरू की अनिष्टता के निवारणार्थ प्रमुख उपाय निम्न है :–

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. मंत्रो और स्त्रोतों का जाप

गुरू ग्रह से उत्पन्न पीड़ा के निवारण हेतु जातक को गुरू के मंत्र का श्रद्धा पूर्वक जाप करने से दोष की शांति होती है। गुरू पुष्य योग में इस मंत्र का जाप प्रारंभ करे तो अति शुभ फलदायी है।

गुरू ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

श्री अस्य श्री गुरूमहामंत्रस्य श्रीगृत्समदऋषिः,
जगतीछंदः, श्रीगुरूर्देवता, श्री गुरूप्रसादसिद्धयर्थे
जपे विनयोगः।।

ध्यान

ऊँ वराक्षमालिका दण्डकमण्डलुधरं विभुम्।
पुष्परागाङ्कितं पीतवरदं भावयेद्गुरूम्।।

इसके उपरांत गुरू ग्रह की मानस पूजा के बाद निम्नलिखित मंत्र का कम से कम एक माला का जाप करना चाहिये।

ऊँ बं बृहस्पतये नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद गुरू के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्र जाप का प्रभाव बढ़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू के मंत्र की जाप संख्या 19,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करने या करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 76,000 हजाप जाप तथा उसके दस अंश अर्थात 7600 मंत्र से गुरू के मंत्र का हवन करना चाहिये। गुरू हवन के लिये उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करना चाहिये तथा अग्निवास भी पृथ्वी पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य द्वार भी संकल्प द्वारा करवाये जा सकते है।

गुरू कवच का पाठ करना भी शुभ फलदायक है। पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

2. यंत्र द्वारा गुरू दोष निवारण

गुरू पुष्य योग में या किसी भी शुक्ल पक्ष के गुरूवार को शुभ मुहूर्त में सोने अथवा चांदी के चौकोर पत्र पर गुरू यंत्र खुदवाएं और मध्य में पीला पुखराज जड़वाकर गुरू गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर पूजागृह में स्थापित करें।

ऊँ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि
तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।

इसे भोजपत्र पर लिखकर कंठ या दाहिनी भुजा में भी धारण किया जा सकता है अथवा सोने की अंगूठी में तर्जनी अंगुली में भी पहनने से लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू का यंत्र निम्न प्रकार का है:-

10	5	12
11	9	7
6	13	8

3. व्रत-उपवास द्वारा गुरू ग्रह दोष निवारण

गुरू की पीड़ा के निवारण के लिये गुरूवार का व्रत करना उत्तम होता है। जातक उस दिन भगवान विष्णु के दर्शन करें और एक समय पीला भोजन अथवा फलाहार करना चाहियें। इस दिन किसी साधु, संत, मठाधीश या आध्यात्मिक व्यक्ति का पीले पुष्पों से सम्मान करें एवं उनका आर्शीवाद लें।

4. औषधि द्वारा गुरू ग्रह दोष निवारण

गुरू की पीड़ा को शांत करने के लिये जातक को स्नान के जल में शक्कर, गूलर, सफेद सरसों, पीलें पुष्प, हल्दी, शहद तथा नवीन कोपलों आदि को डालकर स्नान करना चाहिये। इससे गुरू की अनुकूलता प्राप्त होती है।

5. रत्न द्वारा गुरू ग्रह दोष निवारण

गुरू का प्रतिनिधि रत्न पुखराज है, अतः गुरू दोष निवारण के लिये पुखराज धारण किया जाता है। इसके लिये पुखराज को रविवार, सोमवार या गुरूवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। पुखराज को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय पुष्य नक्षत्र होना चाहिये यदि पुष्य नक्षत्र न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो पुर्नवसु, विशाखा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में भी यह कार्य किया जा सकता है। पुखराज कम से कम तीन रती का होना चाहिये। आड़े–तिरछे कट के एवं खंड़ित, असमान पुखराज नहीं होना चाहिये। पुखराज को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहे। इस अंगुठी को प्रातः काल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को लगभग आधे घंटे गाय के कच्चे दूध में डुबा कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक पीले कपड़े पर रखें जिस पर चंदन तथा अष्टगंध से बृहस्पति यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप–दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करना चाहिये। अब निम्न मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।

ऊँ बं बृहस्पतये नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें बृहस्पति देव का वास समझकर अनामिका अंगुलि में धारण करना चाहिये। यंत्रों को पूजाघर में रखना चाहिये या फिर किसी ब्राह्मण को दान कर देना चाहिये। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के धारण करने से गुरू ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. पुखराज का विकल्प

पुखराज एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। पुखराज के स्थान पर सुनैला, जिरकॉन, या पीला टूर्मेलिन का प्रयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय पुखराज के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी पुखराज के अनुसार ही है।

7. दान

दोष निवारण हेतु गुरूवार के दिन शुभ समय में विनम्रतापूर्वक किसी सुपात्र को निम्न वस्तुओं का यथाशक्ति दान करना चाहिये।

पीले वस्त्र, चने की दाल, घी, फल, कांसा, हल्दी, पुखराज, गुरू यंत्र, पुस्तक तथा दक्षिणा आदि।

8. भाव के अनुसार उपाय

1. प्रथम भाव में गुरू

गुरू यदि प्रथम भाव में हो तो साधु को पीले वस्त्र दान करना चाहिये तथा भोजन करवाना चाहियें।

2. द्वितीय भाव मे गुरू

गुरू के द्वितीय भाव में होने पर चना दाल पीले कपड़े मे बांधकर मन्दिर में पुजारी को देना चाहिये। अतिथियों की सेवा सत्कार करना चाहिये।

3. तृतीय भाव में गुरू

गुरू के तृतीय भाव में होने पर दुर्गा पूजा या कन्याओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पूजा करना शुभ फल प्रदान करता है।

4. चतुर्थ भाव में गुरू

गुरू के चतुर्थ भाव में होने पर श्री विष्णुजी के मंदिर में नित्य दर्शन से लाभ प्राप्त होता है।

5. पंचम भाव में गुरू

यदि गुरू पंचम भाव में स्थित है तो गणेश जी की पूजा करना चाहिये तथा केसर जल में प्रवाहित करना भी शुभफलदायक है। स्वर्ण धातु धारण करना चाहिये।

6. षष्ठम भाव में गुरू

षष्ठम भाव में गुरू हो तो स्वर्ण धातु धारण करना चाहिये। पीपल में नित्य जल ड़ालना चाहिये।

7. सप्तम भाव में गुरू

यदि सप्तम भाव में गुरू है तो शिव भगवान की पुजा करनी चाहिये।

8. अष्ठम भाव में गुरू

यदि गुरू अष्ठम भाव में है तो हर समय गले में सोना या पीला धागा रखना चाहिये। स्वयं के वजन का 8 वां भाग जितनी चने की दाल 8 दिन तक मन्दिर में देना चाहिये।

9. नवम भाव में गुरू

यदि गुरू नवम भाव मैं है तो प्रतिदिन मन्दिर में जाने तथा अपने से बडों की सेवा करने से शुभ फल प्राप्त होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. दशम भाव में गुरू

यदि गुरू दशम भाव में स्थित हैं तो मंदिर में 43 दिन लगातार बादाम चढ़ाना चाहिये।

11. एकादश भाव में गुरू

एकदश भाव में गुरू होने पर लक्ष्मीनारायण के मंदिर में नित्य अर्चना व दर्शन करने चाहिये।

12. द्वादश भाव में गुरू

द्वादश भाव में गुरू है तो पीपल में पानी ड़ालना चाहिये तथा साधु ब्राह्मणों की सेवा करना भी शुभ फल दायक है।

अन्य उपाय

1. विष्णु भगवान की पूजा कर जल से पीपल को सीचना चाहिये।
2. मस्तक पर केसर व हल्दी का तिलक लगाना चाहिये।
3. हल्दी का दुकड़ा पीले धागे से भुजा पर बांधना चाहिये।
4. झूठी गवाही देने से बचे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – शुक्र

शुक्र, वृष एवं तुला राशि का स्वामी है। इसका मूल त्रिकोण तुला का होता है। मीन राशि में यह उच का तथा कन्या राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग उज्जवल एवं सफेद है। इसकी जाति ब्राह्मण है। शुक्र की दिशा आग्नेय और धातु चांदी है। यह स्त्री ग्रह है। यह जल तत्व का ग्रह है। इसकी प्रतिनिधि ऋतु बसंत है। प्रतिनिधि पशु हाथी या सफेद घोड़ा है। यह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शुक्र के मित्र ग्रह बुध एवं शनि है। इसका शत्रु ग्रह सूर्य एवं चंद्रमा है। मंगल एवं गुरू ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर के चंद्र की स्थिति दोनों नेत्र के स्थान पर है। शुक्र ग्रह के लिये भाव का कारक तत्व सप्तम भाव है। शुक्र एक राशि में एक माह तक रहता है। शुक्र ग्रह का स्वभाव शुभ माना जाता है। इस ग्रह के हवन के लिये गूलर की समिधा उत्तम होती है। गुण रजोगुण है।

शुक्र चंद्र स्थित राशि से षष्ठ, सप्तम एवं दशम भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही शुक्र की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। शुक्र की अनिष्टता के निवारणार्थ प्रमुख उपाय निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. मंत्रो और स्त्रोतों का जाप

शुक्र ग्रह से उत्पन्न दोष के निवारण हेतु जातक को शुक्र के मंत्र का विधिपूर्वक जाप करना चाहिये।

शुक्र ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्री शुक्रमहामंत्रस्य भारद्वाजऋषिः, त्रिष्टुप्छंदः,
श्री शुक्रो देवता, ह्रां बीजम्। ह्रीं शक्तिः ह्रूं कीलकम्,
मम श्री शुक्रग्रहप्रसादप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।।

ध्यान

ऊँ जटिलं साक्षसूत्रं च वरदण्डकमण्डलून्।
वेतवस्त्रावृतं शुंक्र ध्यायेद्दानवपूजितम्।।

इसके उपरांत निम्नलिखित मंत्र का कम से कम एक माला का जप करना चाहिये।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद शुक्र के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्रजाप का प्रभाव बढ़ता है।

शुक्र के मंत्र की जाप संख्या 16,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 64,000 हजार जाप तथा उसके दस अंश अर्थात 6400 मंत्र से शुक्र के मंत्र का हवन करना चाहिये। शुक्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हवन उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञान करना चाहिये तथा अभिलाष की पृथ्वी पर हो तब हवन करना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य द्वारा भी संकल्प द्वारा करवायें जा सकते है।

कवच का पाठ भी शुभ फलदायक है। इस पाठ को करने से शारीरिक पुष्टता और सुरक्षा मिलती है।

अन्त में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

2. यंत्र द्वारा शुक्र दोष निवारण

शुक्रवार को या शुक्र के नक्षत्र में शुभ मुहूर्त में चांदी के चौकोर पत्र पर यंत्र को उत्कीर्ण करवाना चाहिये। यदि संभव हो तो मध्य में हीरा जड़वा लेना चाहिये। इसके उपरांत शुक्र गायत्री मंत्र से उसे अभिमंत्रित कर पूजा में स्थापित करें और नित्य पूजन करते रहना चाहिये।

ॐ भृगुजय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

इस यंत्र को भोजपत्र पर निर्मित करके कंठ अथवा भुजा पर भी धारण कर सकते है।

शुक का यंत्र निम्न प्रकार है। :-

11	6	13
12	10	8
7	14	9

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. व्रत–उपवास द्वारा शुक्र ग्रह दोष निवारण

शुक्र ग्रह से पीड़ित व्यक्ति को शुक्रवार को व्रत रखना चाहिये। व्रत के दिन नमकरहित भोजन करना चाहिये। सांयकाल सफेद रंग की गाय का पूजन करना लाभदायक होता है। व्रत के दिन देवी का दर्शन आवश्यक रूप से करना चाहिये। शुक्रवार के दिन शुभ मुहूर्त में किसी सुपात्र को शुक्र के दान सामग्री का दान अपने वजन के बराबर या यथा संभव करना चाहिये।

4. औषधि द्वारा शुक्र ग्रह दोष निवारण

शुक्र द्वारा उत्पन्न अरिष्ट को शांत करने के लिये जातक को स्नान के जल में इलायची, मैनसिल, दूध, मूल के बीज, पीपरामूल, चावल, आदि मिलाकर स्नान करने से लाभ होता है।

5. रत्न द्वारा शुक्र ग्रह दोष निवारण

शुक्र का प्रतिनिधि रत्न हीरा है। शुक्र दोष निवारण के लिये हीरा धारण किया जाता है। इसके लिये हीरे को शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। हीरा को खरीदने और अंगूठी में जड़ने के समय भरणी, पूर्वा फाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में भी होना चाहिये। हीरा कम से कम पचास सेंट का होना चाहिये। हीरा को अंगूठी के इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता हो। इस अंगूठी को प्रातः काल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को लगभग आधे घंटे गाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कच्चे दूध में डुबा कर कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक सफेद रेशमी कपड़े पर रखें जिस पर सफेद चंदन से शुक्र यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप, दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करनी चाहिये। अब निम्न मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।

ॐ शुं शुक्राय नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें शुक्र देव का वास समझकर तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिये। यंत्रों को पूजाघर में रखें या फिर किसी ब्राह्मण को दान करना चाहिये। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के धारण करने से शुक्र ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

6. हीरे का विकल्प

हीरा एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। हीरे के स्थान पर अमेरिकन डायमंड या जिरकॉन का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनको खरीदना भी संभव नहीं है तो गूलर की जड़ का उपयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय हीरे के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी हीरे के अनुसार ही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. दान

चावल, चांदी का टुकड़ा, सफेद चंदन, रेश्मी वस्त्र, सुंगधित द्रव्य, मिश्री, केसर, इलायची, दूध, दही, हीरा, शुक्र यंत्र तथा दक्षिणा आदि का दान करना चाहिये। शुक्र की शांति के लिये।

8. भाव के अनुसार उपाय

1. प्रथम भाव में शुक्र

शुक्र के प्रथम भाव मे हो तो काली गाय की सेवा करें। पराई स्त्री से अनैतिक सम्पर्क नहीं रखना चाहिये।

2. द्वितीय भाव में शुक्र

शुक्र के द्वितीय भाव में हो तो 2 किलो आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलाये।

3. तृतीय भाव में शुक्र

शुक्र तृतीय भाव में हो तो भाई व उसके परिवार की सेवा तथा ध्यान रखना चाहिये।

4. चतुर्थ भाव में शुक्र

शुक्र यदि चतुर्थ भाव में हो तो दही का दान करना चाहिये। गाय की सेवा करनी चाहिये।

5. पंचम भाव में शुक्र

पंचम भाव में शुक्र स्थित हो तो जातक को प्रायः देवी मां के मन्दिर में पूजा- अर्चना एवं दर्शन करना चाहिये।

6. षष्ठम भाव में शुक्र

षष्ठम भाव में शुक्र हो तो चिड़ियों व पक्षियों को दाना ड़ालना चाहिये। कांसे के पात्र में दही का दान भी लाभप्रद है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. सप्तम भाव में शुक्र

यदि सप्तम भाव में शुक्र है तो लाल गाय की सेवा करनी चाहिये। कांसे का बर्तन का दान शुक्रवार के दिन मन्दिर में करना चाहिये।

8. अष्ठम भाव में शुक

यदि शुक्र अष्ठम भाव में है तो जातक को काली गाय की सेवा करना चाहिये तथा 8 शुक्रवार काली गाय को गुड लगाकर आटे का पेड़ा खिलाना चाहिये।

9. नवम भाव में शुक्र

यदि शुक्र नवम भाव मे है तो गाय की सेवा करनी चाहिये।

10. दशम भाव में शुक्र

यदि शुक्र दशम भाव मे स्थित है तो नित्य देवी के मंदिर में पूजा एवं अर्चना करना चाहिये।

11. एकादश भाव में शुक्र

एकादश भाव में शुक्र होने पर रुई तथा दही मन्दिर में देना चाहिये।

12. द्वादश भाव में सूर्य

यदि द्वादश भाव में शुक्र हो तो गाय का दान करना चाहिये।

अन्य उपाय

1. घी, दही और कपूर मंदिर में दान करें।
2. महीनें में एक बार गो मूत्र का सेवन करें।
3. जानवरों पर स्नेह रखें।
4. नित्य देवी मां की आराधना करें।

अन्य स्त्री से अनैतिक संबंध ना रखें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – शनि

शनि, मकर एवं कुभ राशि का स्वामी है। इसका मूल त्रिकोण कुंभ का होता है। तुला राशि में यह उच्च का तथा मेष राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग नीला है। इसकी जाति शुद्र है। शनि की दिशा पश्चिम और धातु लोहा है। यह पुरूष ग्रह है। इसका तत्व वायु है। प्रतिनिधि पशु भैंस है। यह तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। शनि के मित्र ग्रह शुक्र है। इसका शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्र एवं बुध है। गुरू ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर में शनि की स्थिति पैरों के स्थान पर है। शनि ग्रह के लिये लगभग ढ़ाई वर्ष तक रहता है। शनि ग्रह का स्वभाव क्रुर माना जाता है। शनि ग्रह का गुण तमोंगुण है।

शनि चंद्र राशि से प्रथम, द्वितीय, पंचम, सप्तम, एकादश एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही शनि की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यह अनुभव सिद्ध है। यहां शनि की अनिष्टता के निवारणार्थ प्रमुख उपाय निम्न है।

1. मंत्रो और स्त्रोतों का जाप

शनि द्वारा उत्पन्न पीड़ा को शांत करने के लिये पीड़ित व्यक्ति को शनि के मंत्र का जाप करना लाभदायक होता है। इसे शनिवार से तथा शुभ मुहूर्त से ही प्रारंभ करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंत्र जाप के लिये प्रातः काल का समय अच्छा होता है। इसके अलावा संध्या काल (सूर्योदय, दोपहर 12 बजे, सूर्यास्त) के समय भी उपर्युक्त रहता है। प्रतिदिन किसी एक निश्चित समय पर जाप करना चाहिये।

विनियोग

अस्य श्री शनैश्चरकरचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः,
अनुष्टुप् छनदः शनैश्चरो देवता शीं शक्तिः शूं
कीलकं शनैश्चरप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ध्यान

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनु मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद् वरदः प्रशांत।।

ध्यान के उपरांत निम्न जाप भावपूर्वक करना चाहिये।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इन जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद शनि के 108 नामों का जाप करना चाहिये। इससे मंत्रजाप का प्रभाव बढ़ता है।

शनि के मंत्र की जाप संख्या 23,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करने या करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 92,000 हजार जाप तथा उसके दश अंश अर्थात 9200 मंत्र से शनि के मंत्र का हवन करना चाहिये। शनि हवन को उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करके करना चाहिये तथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब पृथ्वी अग्निवास पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य द्वारा भी संकल द्वारा करवाये जा सकते है।

कवच का पाठ भी करना चाहिये। यह शारीरिक पुष्टता और सुरक्षा प्रदान करता है।

पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

2. यंत्र द्वारा शनि दोष निवारण

किसी भी शुभ योग में ताम्र पत्र में शनि यंत्र को उत्कीर्ण कराएं। मध्य में नीलम जड़वाकर शनि गायत्री से 108 बार जप करके प्रतिष्ठित कर ले और नित्य पूजा गृह में स्थापित करके पूजा करनी चाहिये। यदि शारीरिक पीड़ा अधिक है, तो इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर कंठ में या दाहिनी भुजा में भी धारण कर सकते है अथवा अंगूठी पर शनि यंत्र खुदवाएं और शुद्ध करके मध्यमा अंगुली में धारण कर लें।

ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शौरिः प्रचोदयात् ।

शनि का यंत्र निम्न प्रकार का है :-

12	7	14
13	11	9
8	15	10

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. व्रत–उपवास द्वारा शनि ग्रह दोष निवारण

शनि ग्रह शनिवार का स्वामी है, अतः उसकी प्रसन्नता के लिये शनिवार का व्रत जातक को करना चाहिये। व्रत के दिन स्नानादि के उपरांत शनि देवता तथा हनुमान जी के दर्शन करें तथा सायंकाल उन्हें भोग लगाकर एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिये। यह ध्यान रहे कि उस दिन क्रोध न आए और किसी विद्वान पुरूष का अपमान न हो।

4. रत्न द्वारा शनि ग्रह दोष निवारण

शनि का प्रतिनिधि रत्न नीलम है अतः शनि दोष निवारण के लिये नीलम धारण किया जाता है। इसके लिये नीलम को शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। नीलम को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय पुष्य नक्षत्र होना चाहिये। यदि पुष्य नक्षत्र न हो तो अनुराधा या भाद्रपद नक्षत्र में भी यह कार्य किया जा सकता है। नीलम कम से कम तीन रती का होना चाहिये। आड़े–तिरछे कट के एवं खंड़ित असमान नीलम नहीं होना चाहिये। नीलम को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहे। अंगूठी को प्रातः काल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को लगभग आधे घंटे तक गाय के कच्चे दूध में डुबा कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकालकर गंगाजल से धोना चाहिये। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक नीले कपड़े पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रखें जिस पर चंदन से शनि यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप-दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ में अंगूठी की भी पूजा करना चाहिये। उसके पश्चात निम्न मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें शनि का वास समझकर मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिये। यंत्रों को पूजाघर में रखना चाहिये या फिर किसी ब्राह्मण को दान करना चाहिये। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के धारण से शनि ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

5. नीलम का विकल्प

नीलम एम मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। नीलम के स्थान पर नीला अकिक, नीलमणि, या अमेथिस्ट (कटैल) का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनको खरीदना भी संभव नहीं है तो शमी की जड़ का उपयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय नीलम के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी नीलम के अनुसार ही है।

6. दान

शनि ग्रह के दोष से पीड़ित जातक को तिल, नीलम, उड़द, तैल, काले वस्त्र, लोहा, भैंस, काले फूल, जूता, छाता तथा दक्षिणा का दान करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. भाव के अनुसार उपाय

1. प्रथम भाव में शनि

धन के लिये बंदर पाले। सेहत के लिये बड़ के पेड में दूध ड़ालकर गीली मिट्टी का तिलक लगायें। कारोबार के लिये काला सुरमा या काला नमक जमीन में दबाना चाहिये। तवा, अंगीठी का दान किसी साधु को दान करें।

2. द्वितीय भाव में शनि

43 दिन लगातार नंगे पांव मन्दिर जाकर अपनी भूल के लिये ईश्वर से क्षमायाचना करे। माथे पर कभी भी तेल न लगावे बल्कि दूध या दही का तिलक लगाये। ससुराल के लाभ के लिये सांप को दूध पिलाये। उड़द, काली मिर्च, चने, चंदन की लकड़ी मन्दिर में दें।

3. तृतीय भाव में शनि

जातक तीन कुत्ते (काले, सफेद) अवश्य पाले तो मकान बनेगे, धनवान बनेगें, जब केतु 3, 10 हो तो एक भूरा काला कुत्ता पाले। घर की अंधेरी कोठरी धन सम्पत्ति के लिये ठीक होगी। उसमें शनि की चीजें स्थापित करें। घर की दहलीज को लोहे की कीलों से कील ले।

4. चतुर्थ भाव में शनि

सांप को दूध पिलाये, कौओं या भैंस को चंद्र की चीजे (चावल या दूध) दे, मन्दिर में चावल या दूध गिराना चंद्र के प्रभाव को उच्च करेगा, तेल, उडद, काले कपड़े का दान देने से लाभ होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. पंचम भाव में शनि

शनि पंचम भाव में स्थित के समय जातक अपन जद्दी घर में, तांबा, चांदी, सोना एक पवर कायम कर ले, उसे वहां से हटायें मत यदि नं. 10 में राहु हो तो रात को घर में दुध से आग बुझायें। तीन कुत्तों को पालना अच्छा फल देगा। काला सुरमा जल में प्रवाह करें। अपने भार का दसवां हिस्सा मन्दिर में बादाम चढ़ा कर आधे वापिस लाकर एक वर्ष तक घर में रखें। वर्ष समाप्त हो जाने के पश्चात् वे बादाम बहते पानी में बहाये।

अंधेरी कोठरी में (जद्दी मकान की) मूंग या हथियार रख छोड़ो। कुत्ता पाले। अपने घर में सूर्य, चंद्र, मंगल (सोना, चांदी, तांबा) कायम करें। परन्तु जब नं. 10 में राहु या केतु हो तोउन ग्रहो (सूर्य, चंद्र, मंगल) की चीजो (गुड, दूध, सौंफ) को घर में जलायें।

6. षष्टम भाव में शनि

बीमारी के समय तेल भरा बर्तन खड़े पानी में दबायें तेल में पहले अपना मुंह देख ले। कारोबार के लिये बुध का उपाय करें। संतान के लिये कुत्ता पाले। नारियल या बादाम बहते पानी में बहाये। सांप को दूध पिलाने से संतान सुख बढ़े। बेरी के वृक्ष की जड़ में दूध चढायें।

7. सप्तम भाव में शनि

जब शनि सोया हो अर्थात भाव 1 खाली हो, या शत्रु का भय उपस्थित हो तो बांसुरी खांड में भर कर बाहर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीराने में दबायें। काली गाय की सेवा करें। जब नं. 1 खाली हो तो शहद से भरा बर्तन अवश्य रखें, नहीं तो पौत्र के जन्म के बाद घर में निर्धनता आ जायेगी। सफेद सुरमा आंखों में डाले।

8. अष्ठम भाव में शनि

स्नान करते समय पानी में दूध ड़ाल लें और पत्थर या लकड़ी के फट्टै पर बैठ कर स्नान करें, ध्यान रहे पत्थर या लकडी का फट्टा पैर के नीचे होना चाहिये। यदि चंद्र ठीक हो तो 800 ग्राम या 8 किलो उड़द सरसों का तेल लगा कर बहते पानी में बहा दे। यदि चंद्र मंदा हो तो पहिले 800 ग्राम दूध पानी में बहाये, फिर उड़द बहाये, दूध सोमवार को, उड़द बुधवार या शनिवार को। चांदी पहने, नशें से बचे।

9. नवम भाव में शनि

बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।

10. दशम भाव में शनि

शनि के मंदे समय में बृहस्पति को उपाय सहायक क्योंकि नं. 4 बृहस्पति का पक्का घर है उस घर की दृष्टि 1 के अनुसार इस घर पर पड़ रही है। जितना दूसरों का आदर मान करेंगे उतना ही आप उन्नति करेंगे। शराब, मांस, अंड़े, का प्रयोग नहीं करना चाहिये। चाचा की सेवा करों।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. एकादश भाव में शनि

जब भी काम पर घर से बाहर जाये, पानी का कुंभ या घड़ा सामने रखें और तेल या शराब प्रातः सूर्योदय पर 43 दिन तक लगातार धरती पर गिराये। शराब और पराई स्त्री से दूर रहना बहुत जरूरी है। किसी से फरेब न करें। जब शनि का प्रभाव नीच हो रहा हो तो शनि का उपाय करें। राहु या केतु के नीच होने पर मंगल का उपाय करें। शनि को पानी की तरह बहने वाली चीजें निरंतर 43 दिन तक शराब, स्पिरट, तेल, सरसों, प्रातः सूर्य निकलने के समय धरती पर गिरायें।

12. द्वादश भाव में शनि

शनि को कायम रखने के लिये घर की अंधेरी कोठरी में 12 बादाम काले कपड़े में बांधकर, लोहे के पात्र में रख छोडे वो वहां सदा पड़े रहें। शराब या मांस का प्रयोग न करें और झुठ न बोले।

अन्य उपाय

1. शनि मंदिर में तेल का दीपक शनिवार को नित्य लगाये।
2. गरीबों की सेवा, मदद करें। जरूरत मंदों की मदद करें।
3. पीपल के पेड़ पर पानी चढ़ायें।
4. कबुतरों को दाना ड़ालें।
5. शनिवार को तेल में अपना मुंह देखें। उस तेल में गुलगुले, मीठी चीजें आदि बनाकर गरीब को, भैंस को और कुत्ते को देवें।
6. बंदरों को गुड़ और चना खिलाएं। विशेषकर शनिवार को।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. शनिवार को नंगे पैर मन्दिर में जाकर एक नारियल व बादाम छिलकों वाली 7 शनिवार चढ़ाए।
8. हनुमानजी की ऐसी मूर्ति देखे जिसमें उनका मुंह दक्षिण की ओर हो। फिर प्रत्येक मंगलवार और शनिवार को चमेली के तेल में गले से नीचे सिंदूर का चोला चढ़ाये।
9. 49 तिल के लड्डू गुड़ की चासनी में बनाएं। प्रत्येक लड्डू में एक–एक सिक्का रखें। वे लड्डू शनिवार से शुरू करके लगातार 49 दिन तक शनि मन्दिर में दोपहर 12 बजे या शाम को बिना बोले चढ़ावे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह निवारण दोष – राहु

राहु का मूल त्रिकोण कर्क का होता है। मिथुन राशि में यह उच्च का तथा धनु राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग याम वर्ण है। इसकी जाति म्लेच्छ है। राहु की दिशा नैऋत्य और धातु सीसा है। यह पुरूष ग्रह है। यह वायु तत्व का ग्रह है। प्रतिनिधि पशु घोड़ा एवं ऊंट है। यह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। राहु के मित्र ग्रह बुध, शुक्र एवं शनि है। इसका शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्रमा एवं मंगल है। गुरू ग्रह सम ग्रह है। काल पुरूष के शरीर में राहु की स्थिति उदर के स्थान पर है। राहु ग्रह के लिये भाव का कारक तत्व द्वितीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भाव है। राहु एक राशि में डेढ़ वर्ष तक रहता है। राहु ग्रह का स्वभाव पाप एवं क्रूर माना जाता है। राहु तमोगुणी है।

राहु चंद्र स्थित राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, दशम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही राहु की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां राहु की अनिष्टता के निवारणार्थ कतिपय प्रमुख उपाय प्रस्तुत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. मंत्रो और स्त्रोतों का जाप

राहु ग्रह से उत्पन्न पीड़ा का शमन करने हेतु जातक को राहु के मंत्र का जाप करना कल्याणकारी होता है।

राहु ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्रीराहुमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवता, हों बीजम्, ह्री शक्तिः हूं कीलकं, मम श्री राहुग्रहप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।।

ध्यान

ऊँ करालवदनं खड्गचर्मशूलवरान्वितम्।
नीलसिंहासनस्थं च ध्यायेद्राहुं प्रशांतये।।

इसके उपरांत राहु ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जाप करना चाहिये।

ऊँ रां राहवे नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र से जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिये माला के बाद राहु के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्रजाप का प्रभाव बढ़ता है।

राहु के मंत्र की जाप संख्या 18,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करने या करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 72,000 हजार जाप तथा उसके दस अंश अर्थात् 7200 मंत्र से राहु के मंत्र का हवन करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राहु हवन के लिये उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करना चाहिये तथा अग्निवास भी पृथ्वी पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य द्वारा भी संकल्प द्वारा करवायें जा सकते है।

राहु कवच का पाठ करना भी शारीरिक पुष्टता और सुरक्षा प्रदान करता है।

राहु कवच के पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

2. यंत्र द्वारा राहु दोष निवारण

राहु ग्रह की कष्टदायक स्थितियों से पीड़ित जातक को शुभ मुहूर्त में स्वर्णपात्र अथवा ताम्र पत्र पर राहु यंत्र उत्कीर्ण कराकर, उसके मध्य में गोमेद जड़वाकर, राहु गायत्री से पूजित प्रतिष्ठित करके पूजा में रखना चाहिये और नित्य पूजन करना चाहिये। राहु यंत्र को राहु के नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर उसे प्रतिष्ठित करके, शरीर में भी धारण किया जा सकता है।

ऊँ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

राहु का यंत्र निम्न प्रकार का है –

13	8	15
14	12	10
9	16	11

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. व्रत–उपवास द्वारा राहु ग्रह दोष निवारण

राहु ग्रह से संबंधित व्रत शनिवार और सोमवार दोनों ही दिन प्रारम्भ किया जा सकता है। व्रत के दिन एक समय फलाहार अथवा दुग्धाहार कर लेना चाहिये और उस दिन शिव लिंग पर बिल्व पत्र तथा धतूरे के पत्र अर्पित करने चाहिये। शिव मंदिर के पुजारी से आशीर्वाद ग्रहण करें तथा सत्संग भी करना चाहिये।

4. औषधि द्वारा राहु ग्रह दोष निवारण

राहु की पीड़ा को शांत करने के लिये जातक को स्नान के जल में शक्कर, गूलर, सफेद सरसों, पीले पुष्प, हल्दी, शहद तथा नवीन कोपलों आदि को ड़ालकर स्नान करना चाहिये। इससे राहु की अनुकूलता प्राप्त होती है।

5. रत्न द्वारा राहु ग्रह दोष निवारण

राहु का प्रतिनिधि रत्न गोमेद है अतः राहु दोष निवारण के लिये गोमेद धारण किया जाता है। इसके लिये गोमेद को सोमवार या शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। गोमेद को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा नक्षत्र होना चाहिये। गोमेद कम से कम तीन रती का होना चाहिये। आड़े–तिरछे कट के एवं खण्ड़ित, असमान गोमेद नहीं होना चाहिये। गोमेद को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहे। इस अंगूठी को प्रातः काल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को लगभग आधे घंटे गाय के कच्चे दूध में डुबा कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकालकर गंगाजल से धोना चाहिये। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक नीले कपड़े पर रखें जिस पर चंदन से राहु यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप–दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करें। अब निम्न मंत्र का 108 बार जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

इस जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें राहु देव का वास समझकर मध्यमा अंगुली में धारण करें। यंत्रों को पूजाघर में रखें या फिर किसी ब्राह्मण को दान कर दें। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के ध ारण करने से राहु ग्रह के दो। निवारण में लाभ होता है।

6. गोमेद का विकल्प

गोमेद एक मूल्यवान रत्न है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। गोमेद के स्थान गारनेट या तामड़ा का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनको खरीदना भी संभव नहीं है तो दूर्वा का उपयोग किया जा सकता है। इनकों खरीद लाने का समय गोमेद के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी गोमेद के अनुसार ही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. दान

राहु की पीड़ा को दूर करने के लिये शुक्रवार अथवा बुधवार को सांयकाल निम्नलिखित वस्तुओं को किसी सुयोग्य पात्र को दान देना चाहिये–गोमेद, सरसों का तेल, नीले रंग का कपड़ा, अभ्रक, सूप, राहु यंत्र, तिल, लोहा एवं दक्षिणा आदि।

8. भाव के अनुसार उपाय

1. प्रथम भाव में राहु

राहु प्रथम भाव में हो तो गले में चांदी पहने। नारियल बहते पानी में प्रवाहित करें।

2. द्वितीय भाव में राहु

राहु द्वितीय भाव में हो तो जौ या सरसों को जल में प्रवाह करें।

3. तृतीय भाव में राहु

राहु तृतीय भाव में हो तो कुत्ते को नित्य ब्रेड़ या टोस्ट झ़ले।

4. चतुर्थ भाव में राहु

राहु चतुर्थ भाव में हो तो चांदी पहने। 1 किलो धनिया बहते पानी में सात बुधवार को बहाये।

5. पंचम भाव में राहु

यदि राहु पंचम भाव में स्थित है तो संतान सुख के लिये घर की दहलीज के नीचे चांदी का पतरा रखना ठीक रहेगा। चांदी का हाथी घर मे रखें। शराब, मांस, परस्त्रीगमन से दूर रहें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. षष्ठम भाव में राहु

यदि राहु षष्ठम भाव में हो तो भूरा काला कुत्ता पालना बहुत शुभ रहेगा। मा सरस्वती जी की मूर्ति के आगे निरंतर 43 दिन नीले फूल चढ़ाये।

7. सप्तम भाव में राहु

यदि सप्तम भाव में राहु है तो नारियल एवं बादाम शनिवार के दिन बहतें पानी में बहायें।

8. अष्ठम भाव में राहु

यदि राहु अ ठ्म भाव में है तो कोयला जल में प्रवाह करें।

9. नवम भाव में राहु

यदि राहु नवम भाव मे है तो कुत्ता पालना शुभ है।

10. दशम भाव में राहु

यदि राहु दशम भाव मे स्थित है तो मसुर की दाल बहते पानी में बहायें।

11. एकादश भाव में राहु

एकादश भाव में राहु होने पर सोना पहने। केसर का तिलक लगाये। चांदी के गिलास में पानी पिये।

12. द्वादश भाव में राहु

यदि द्वादश भाव में राहु है तो कच्चे कोयले को जल प्रवाह करें। अपनी आय का कुछ भाग अपनी कन्या या बहिन को देते रहना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्य उपाय

1. तम्बाकु का सेवन न करें।

2. घर के आस–पास गंदा पानी जमा न होने दे।

3. सीसा (धातु) और एक नारियल बहते पानी में प्रवाहित करें।

4. मां सरस्वती को नित्य प्रणाम करें।

5. संयुक्त परिवार में रहे।

6. कुत्ते को नित्य टोस्ट या ब्रेड़ ड़ालें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह दोष निवारण – केतु

केतु का मूल त्रिकोण मकर का होता है। धनु राशि में यह उच्च का तथा मिथुन राशि में नीच का होता है। इसका प्रतिनिधि रंग चितकबरा काला है। इसकी जाति म्लेच्छ है। केतु की दिशा वायव्य और धातु लोहा है। यह पुरूष ग्रह है। प्रतिनिधि पशु बकरा है। केतु के मित्र ग्रह बुध है। राहु ग्रह जैसा इसका स्वभाव भी तमोगुणी है।

केतु चंद्र स्थित राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, दशम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इस अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय यदि श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाए तो निश्चिय ही केतु की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां केतु की अनिष्टता के निवारणार्थ उपाय निम्न है।

1. मंत्रो और स्त्रोतों का जाप

केतु ग्रह से उत्पन्न पीड़ा से मुक्ति पाने के लिये जातक को केतु के मंत्र का जाप फलदायक होता है।

केतु ग्रह दोष निवारण के लिये निम्नलिखित विनियोग और ध्यान करना चाहिये।

विनियोग

ऊँ अस्य श्रीकेतुमहामन्त्रस्य श्रीमधुच्छंदऋषिः, गायत्रीच्छन्छः, श्री केतुर्देवता, श्रीकेतुग्रहप्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्यान

ॐ धूम्रवर्ण द्विबाहुं च केतु च विक तानानम्
ॐ ग ध्रासनगतं नित्यं ध्यायेत्सर्वफलाप्तये।।

इसके उपरांत केतु ग्रह के निम्नलिखित मंत्र का कम से कम एक माला जाप करना चाहिये।

ॐ कें केतवे नमः

यदि संभव हो तो एक माला से अधिक जाप भी किया जा सकता है। इस मंत्र के जाप के प्रभाव में वृद्धि करने के लिए माला के बाद केतु के 108 नामों का उच्चारण करना चाहिये। इससे मंत्रजाप का प्रभाव बढ़ता है।

केतु के मंत्र की जाप संख्या 17,000 है। कलियुग में चार गुना जाप करने या करवाने से फल प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुल 68,000 हजार जाप तथा उसके दश अंश अर्थात 6800 मंत्र से केतु का हवन करना चाहिये। केतु हवन के लिये उपर्युक्त मुहूर्त ज्ञात करना चाहिये तथा अग्निवास भी पृथ्वी पर हो तब हवन करवाना चाहिये। जाप तथा हवन किसी पंड़ित व आचार्य द्वारा भी संकल्प द्वारा करवाये जा सकते है।

केतु कवच का पाठ भी शुभ फलदायक है।

केतु के पाठ के बाद अंत में क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये।

2. यंत्र द्वारा केतु दोष निवारण

केतु ग्रह से उत्पन्न कष्टों के शमन हेतु जातक को शुभ मुहूर्त में रांगा धातु के चौकोर पत्ते पर यंत्र उत्कीर्ण करवाकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके मध्य में लहसुनियां जड़वाना तथा केतु गायत्री द्वारा उसे अभिमंत्रित प्रतिष्ठत करके नित्यपूजा में रखना चाहिये। इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर प्रतिष्ठित करके शरीर में भी धारण किया जा सकता है अथवा रागे की अंगुठी में खुदवाकर केतु नक्षत्र में अनामिका अंगुली में धारण करना लाभदायक है।

ऊँ तद्मपुत्राय विद्महे अम तेशाय धीमहि
तन्नो केतुः प्रचोदयात्।

इस यंत्र को लोहे की अंगूठी पर उत्कीर्ण करवाकर मध्यमा अंगुली में भी धारण किया जा सकता है।

केतु का यंत्र निम्न प्रकार है। –

14	9	16
15	13	11
10	17	12

3. व्रत–उपवास द्वारा केतु ग्रह दोष निवारण

केतु ग्रह से उत्पन्न अनिष्टों को दूर करने हेतु जातक को सोमवार या मंगलवार का व्रत करना उत्तम होता है। व्रत के दिन पूजा–पाठ के उपरांत दूध–फल आदि का सेवन कर सकते है। सायंकाल एक समय सात्विक भोजन ग्रहण करें। बुजुर्गो से आशीर्वाद लेना चाहिये और किसी का भी अपमान नही करना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. औषधि द्वारा केतु ग्रह दोष निवारण

केतु की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिये जातक को मंगलवार के दिन स्नान के जल में रक्त चंदन, बकरी का दूध, तिल एवं लोहाश थोड़ी मात्रा में मिला लेना चाहिये। इस प्रयोग से केतु की पीड़ा का शमन होकर अनुकूलता प्राप्त होती है।

5. रत्न द्वारा केतु ग्रह दोष निवारण

केतु का प्रतिनिधि रत्न लहसुनिया है अतः केतु दोष निवारण के लिये लहसुनिया धारण किया जाता है। इसके लिये लहसुनिया को गुरूवार को शुक्ल पक्ष में खरीदना चाहिये। लहसुनिया को खरीदने और उसे अंगूठी में जड़ने के समय मघा, मूल और आश्विनी नक्षत्र में करना चाहिये। लहसुनिया कम से कम तीन रती का होना चाहिये। आड़े-तिरछे कट के एवं खंड़ित असमान लहसुनिया नहीं होना चाहिये। लहसुनिया को अंगूठी में इस प्रकार जड़ना चाहिये कि उसका निचला भाग शरीर को स्पर्श करता रहे। इस अंगूठी को प्रातः काल सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। पहनने के पहले अंगूठी को आधे घंटे गाय के कच्चे दूध में डुबो कर रखना चाहिये। दूध में से अंगूठी निकाल कर गंगाजल से धोना चाहिये। जल से धोने के बाद अंगूठी को एक चितकबरे या लाल कपड़े पर रखें जिस पर चंदन से केतु यंत्र बनाया गया हो। यंत्र की पूजा धूप-दीप और पुष्प से करना चाहिये। साथ ही अंगूठी की भी पूजा करनी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिये। अब निम्न मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।

ऊँ कें केतवे नमः

जाप के बाद अंगूठी को श्रद्धापूर्वक उसमें केतु देव का वास समझकर कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें। यंत्रों को पूजाघर में रखें या फिर किसी ब्राह्मण को दान कर दे। अंगूठी को सूर्योदय के समय धारण करना चाहिये। इस अंगूठी के ध ारण करने से केतु ग्रह दोष निवारण में लाभ होता है।

6. लहसुनिया का विकल्प

लहसुनिया एक मूल्यवान धातु है। यदि इसे खरीदना संभव नहीं है तो उसके उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। लहसुनिया के स्थान पर जिरकॉन का प्रयोग किया जा सकता है। यदि इनकों खरीदना भी संभव नहीं है तो कुशा का उपयोग किया जा सकता है। इनको खरीद लाने का समय लहसुनिया के अनुसार ही है तथा इनकी पूजा तथा धारण विधि भी लहसुनिया के अनुसार ही है।

7. दान

निम्नलिखित वस्तुओं का दान बुधवार को सांयकाल किसी सुयोग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक करना चाहिये – सप्तध ान्य, नारियल, कम्बल, वैदूर्य, तिल्ली का तेल, काला वस्त्र, लोहा, ास्त्र तथा दक्षिणा आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. भाव के अनुसार उपाय

1. प्रथम भाव में केतु

केतु प्रथम भाव में हो तो बंदर को गुड़ खिलाना चाहिये। काला–सफेद कंबल मन्दिर में देना चाहिये। प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिये।

2. द्वितीय भाव में केतु

केतु द्वितीय भाव में हो तो माथे पर केसर का तिलक लगाना चाहिये। तिल मंदिर में चढ़ाना चाहिये।

3. तृतीय भाव मे केतु

केतु तृतीय भाव में हो तो केसर का तिलक लगाना चाहिये।

4. चतुर्थ भाव में केतु

केतु चतुर्थ भाव में हो तो चना बहते पानी में बहाना चाहिये। कुत्ता पालना भी शुभ फलदायक है।

5. पंचम भाव मे केतु

यदि केतु पंचम भाव में स्थित है तो केतु की वस्तुओं का दान शुभ है।

6. षष्ठम भाव में केतु

षष्ठम भाव में केतु हो तो हर रोज 43 दिन तक लगातार केले मन्दिर में देना चाहिये। सरस्वती की मूर्ति के आगे निरंतर 43 दिन नीले फूल चढ़ाना चाहिये।

7. सप्तम भाव में केतु

केतु यदि सप्तम भाव में हो तो केसर का तिलक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगाना चाहिये।

8. अष्ठम भाव मे केतु

केतु यदि जन्म पत्रिका में अष्ठम भाव में है तो हर रविवार को 2 किलों चना दाल पीले कपड़े में बांध कर दान करना चाहिये। काला व सफेद कम्बल धर्म स्थान में देना भी सहायक रहेगा। गणेश जी की पूजा करें। कुत्ते को रोटी ड़ाले।

9. नवम भाव में केतु

यदि केतु नवम भाव में है तो कानों में सोना पहने। गणेश जी की पूजा और काला कुत्ता पालना नेक फल देंगे।

10. दशम भाव मे केतु

यदि केतु दशम भाव में स्थित है तो अपना चाल चलन ठीक रखें।

11. एकादश भाव में केतु

एकादश भाव में केतु होने पर काला कुत्ता पालना सबसे उत्तम है।

12. द्वादश भाव में केतु

यदि द्वादश भाव में केतु है तो गणेश जी की नित्य पूजा करें।

अन्य उपाय

1. नौ वर्ष कम आयु वाली कन्याओं को भोजन कराएं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. सदाचारी तथा सद्चरित्र बने।
3. ईधन (लकड़ी) के चार – चार टुकड़े चार दिनों तक बहते पानी में प्रवाहित करें।
4. तिल, नींबू और केले का दान करें।
5. धार्मिक स्थानों में तथा जरूरतमंदों को चितकबरे (काले सफेद रंग के वस्त्र या कम्बल) बांटे।
6. गणेश जी की आराधना करें।
7. गणेश जी के मंदिर में झंड़ा (ध्वज) लगवायें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालसर्प योग

कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को यथासंभव सद्मार्ग पर चलते हुए जीवन बिताना चाहिये। किसी भी प्रकार के जोखिमपूर्ण कार्यों से यथासंभव दूर रहना चाहिये। विशेष रूप से ऐसे जातक को किसी अन्य व्यक्ति को पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिये। यदि कालसर्प योग से ग्रस्त व्यक्ति निरंतर श्रद्धाभाव से अपने कर्तव्यों का पालन करता रहें, तो ऐसे व्यक्ति को कालसर्प योग का विशेष दुष्प्रभाव नहीं मिलता। कालसर्प योग कुण्ड़ली में जिस भाव के द्वारा बन रहा हो, उस भाव से संबंधित व्यक्ति के प्रति सम्मान भाव रखना चाहिये। उसे कभी भी पीड़ा नहीं पहुंचानी चाहिये। यदि कालसर्प योग शुभ फलदायक हो, तो ऐसे व्यक्ति को राहु की दशा में अत्यन्त उच्चस्तरीय सफलता का मार्ग मिलता है।

कालसर्प योग के शुभ प्रभाव

1. राहु जिस राशि में स्थित हो, उसका स्वामी जन्म पत्रिका में बलवान स्थिति में हो अथवा राशि के स्वामी की दृष्टि राहु पर पड़ती हो तो कालसर्प योग के अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाते है।

2. राहु जिस नक्षत्र में स्थित हो, उस नक्षत्र का स्वामी जन्म कुण्ड़ली में बलवान स्थिति में हो।

3. यदि राहु नीच राशि में हो, परन्तु उस राशि के नक्षत्र का स्वामी बलवान हो तो भी ऐसा कालसर्प योग अशुभ परिणाम नहीं देता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. राहु के साथ अन्य ग्रहों की युति भी कालसर्प योग को प्रभावित करती है। यदि नीच राशि के ग्रह का प्रभाव राहु पर हो, तो राहु की दशा या अन्तर्दशा अनुकूल फलदायक नही होती। राहु के साथ शुभ ग्रहों का संबंध होने पर राहु की दशा सुखदायक परिणाम देती है।

2. यदि कालसर्प का मुख राहु एवं कालसर्प का पुच्छ केतु दोनों ही ऐसे ग्रहो के नक्षत्र में स्थित हो, जो कि शुभ एवं बली होकर जन्म कुण्ड़ली के केन्द्र एवं त्रिकोण भावों में स्थित हो, तो ऐसे जातक को कालसर्प योग का बहुत शुभ फल प्राप्त होता है।

भूमि दोष शांति के उपाय

1. मंगल ग्रह के जाप 40,000 स्वयं करें व किसी योग्य पंड़ित द्वारा विधिवत करवायें। जाप पूर्ण होने पर दशांश (जाप की संख्या का दसवा भाग) के जाप करवायें।

2. मंगलवार को भूमि ब्राह्मण को दान करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. मंगलवार को लाल – मूंगा, भूमि, स्वयं के वजन के नौ गुणा मसूर की दाल, गेहुं एवं गुड भी दान करें। इसके अतिरिक्त लाल चंदन, लाल वस्त्र, लाल फूल, सोना, तांबा, केशन, कस्तुरी बैल दक्षिणा सहित दान करें।

4. मंगलवार को हनुमानजी की जीवन पर्यन्त आराधना करें व उनके मंदिर में प्रत्येक मंगलवार को दीये जलायें।

5. मंगल यंत्र की पूजा घर में स्थापना करें व उसकी पूजा लाल चंदन से नित्य करें। मंगल स्त्रोत का पाठ भी करें।

पितृ दोष निवारण

1. श्रीमद् भागवत कथा का एक सप्ताह तक पाठ किसी योग्य आचार्य द्वारा करायें।

2. घर, परिवार, कुटूंब, पडौसी, स्नेहीजन 7 अक्टुबर , 9 अक्टुबर या 15 अक्टुबर को आमंत्रित करे। बहन बेटियों को इच्छानुसार भेंट, वस्त्र इत्यादि देवें।

2. विष्णु सहस्त्रनाम का अखंड़ 108 पाठ किसी योग्य पंड़ित द्वारा रोज सुबह/शाम करायें। 15 अप्रेल से 15 अक्टुबर तक।

3. घर के सभी सदस्य रोज 2 माला द्वादशाक्षर मंत्र (ॐ नमो भगवते वायुदेवाय) का जाप करें।

4. गयाजी या त्रयंबकेश्वर जाकर पितृ दोष शांति (तीन दिन) करायें। घर में गुजरे सभी व्यक्तियों की लिस्ट बनाकर ले जायें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. प्रति अमावस्या को ब्राह्मण को दक्षिण मुख बैठाकर भोजन करायें। भोजन में खीर, जलेबी व कद्दू की सब्जी या उनकी (पितृों की) मनपसंद चीज बनाये। ब्राह्मण को दक्षिणा देकर विदा करें। गाय, कुत्ते, कौवे व भिखारी को भी ड़ाले।

6. हर एकादशी (ग्यारस) या गुरूवार या रविवार को घर में शाम को कीर्तन व भजन मंड़ली द्वारा भजन/कीर्तन करवायें या करें।

7. रसोईघर में पानी के बर्तन के पास या दक्षिण दिशा में पित का स्थान बनायें। वहां एक दिपक रोज सुबह–शाम जलायें। मिठा भोग, ड्राय फ्रुट, इत्यादि का भोग लगाये। कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, साझेदारी, मांगलिक कार्य, परिक्षा, समझोता इत्यादि के लिए जाते वक्त वहां प्रणाम करके जाए।

8. घर में शुद्धता का वातावरण रखें। नान–वेज न खाये। शराब न पिये, झूठ न बोले किसी को धोखा न दें, बड़ों का आदर करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मांगलिक दो। परिहार

निम्नलिखित योगों में मंगल दोष शान्त हो जाता है।

यदि मंगल बृहस्पति के साथ हो या मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल दोष शान्त हो जाता है। मंगल एवं राहु योग भी मंगल दोष का कम करता है।

यदि केन्द्र में बलवान चंद्रमा बैठा हो या जन्म पत्रिका में कहीं भी चन्द्र एवं मंगल की युति हो तो भी मंगल दोष नहीं लगता।

यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि का हो तो भी जातक को मंगल दोष नहीं रहता।

शनि किसी भी भाव में स्थित होकर मंगल को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो भी मंगल दोष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

राहु यदि बृहस्पति या शनि से पूर्ण दृष्टि होकर मंगल पर पूर्ण दृष्टि ड़ालता हो तो भी मंगल दोष का प्रभाव समाप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि मंगल प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में बलवान चंद्रमा गुरू या बुध से युक्त हो तो भी मंगल दोष भंग हो जाता है।

वृषभ व तुला राशि में चतुर्थ, सप्तम व द्वादश भाव में मंगल हो तो भी मांगलिक दोष का परिहार होता।

अष्टम भाव में मंगल धनु व मीन राशि का हो तो भी दोषजनक नही होता है।

मंगल आश्विनी, मघा, मूल नक्षत्र में स्थित हो तो भी मंगल दोष शांत होता है।

यदि मंगल शनि के साथ स्थित हो तो भी मंगल दोष की शांति होती है।

वर या कन्या की जन्म पत्रिका में मंगल जिस स्थान में हो और दूसरे की जन्म पत्रिका में उसी स्थान पर शनि स्थित हो तो भी मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है।

मंगल सप्तम भाव में चर राशि में स्थित हो तो भी मांगलिक दोष नहीं रहता।

सिंह या वृषभ लग्न हो एवं मंगल वृश्चिक राशि में हो तो भी मांगलिक दोष नहीं रहता।

परस्पर कटते मंगल दोष

वर-कन्या की जन्म पत्रिकाओं में कुछ ऐसी भी मंगली दोष कृत स्थितियां आती है जो परस्पर एक-दूसरे को काटती है। जैसे एक सर्प को दूसरा सर्प इस लेता है, तो विष नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चढ़ता। ठीक वैसे ही इस प्रकार के मंगली दोष में एक–दूसरे को कोई भी कहीं भी कैसी भी हानि नहीं पहुंचा पाते हे।

वर या कन्या किसी एक की जन्म पत्रिका में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में यदि शनि होता है और इन्हीं भावों में दूसरी जन्म पत्रिका में मांगलिक होता है, तो मंगली दोष कट जाता है।

यदि जन्म पत्रिका जन्म लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम या द्वादश स्थानों पर मंगली दोष से प्रभावित है तथा जन्म पत्रिका में उक्त स्थानों पर यदि शनि–मंगल या सूर्य, राहु, केतु, क्षीण चंद्रमा पाप ग्रह है, तो मांगलिक दोष कट जाता है।

गुरू, मंगल सप्तम भाव को देखते हों अथवा सप्तम मंगल को गुरू देखता हो, तो भी मांगलिक दोष कट जाता है।

वर–वधु की जन्म पत्रिका में परस्पर मंगल के तुल्य मंगल हो अथवा उक्त स्थिति में ही पापग्रह जैसे सूर्य, शनि, राहु, केतु हो, तो मंगली दोष निष्प्रभ हो जाता है। इस प्रकार मेलापक द्वारा किया गया विवाह चिरायु, पुत्र–पौत्र एवं शुभप्रद होता है।

सपरिहार मंगली दोष

जितने पापग्रह कन्या के नेष्ट स्थानों पर स्थित होते हैं यदि उतने ही या उससे अधिक पापग्रह वर की कुण्ड़ली में हो, तो वे शुभ होते है। अथवा वर–कन्या दोनों की ही जन्म कुण्ड़लियों में समान मंगली योग कारक ग्रह होते हैं, तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमावस्या में जन्म – अशुभ

अमावस्या समाप्ति के केवल 2 घंटे शेष रहे हो तो सिनीवाली जन्म कहा जाता है। इस अवधि में जन्म लेने वाला बालक धन–हानि और अपयश देता है। अमावस्या की अन्तिम घड़ी के अन्तिम पलों में अर्थात अमावस्या समाप्ति के केवल 5, 10 पल या लगभग 2 मिनट पूर्व जन्म हो तो कुहू जन्म कहा जाता है। यह सिनीवाली जन्म से तीव्र अरिष्टकारक है। दोनों ही स्थितियों में शांति–विधान अवश्य करना चाहिये।

अन्य अरिष्ट दोषों में जन्मफल

व्यतिपात में जन्म हो तो बालक आगे चलकर अंगहीन हो सकता है। वैधृति योग में जन्मा बालक पिता का मरण (अशुभ फल) करता है। परिघ योग में बालक के स्वयं के अरिष्ट होता है। इसके अतिरिक्त मृत्युरोग, दग्धयोग, भद्रा, संक्रान्ति दिन, सूर्य–चंद्र ग्रहण का समय, शूल योग, व्याघात, गंड़ योग, वज्र योग, क्षय तिथि, क्षय मास आदि में जन्म अशुभ माना गया है। पूजा–पाठ और दान–दक्षिणा से शांति करानी चाहिये।

एक ही नक्षत्र मे जन्म – अशुभ

कभी– कभी विधि के विधान से ऐसा भी होता है कि पिता के जन्म नक्षत्र के दिन ही पुत्र जन्मता है। यह अशुभ है। इसमें पिता या पुत्र एक को भारी खतरा है। इसी प्रकार यदि भाइयों का बहनों का या माता– पुत्री का एक ही नक्षत्र मे जन्म हो तो अशुभ मानना चाहिये। इस स्थिति में केवल स्वर्ण–दान से ही अशुभता नष्ट होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिखल जन्म दोष

जब किसी स्त्री के तीन लड़कियां के बाद लड़का जन्में या तीन लड़कों के बाद बेटी जन्मे तो त्रिखल नामक दोष होता है। यह अशुभ है। बेटा जन्मने से पिता को भय, बीमारी और धन हानि होती है। लड़की जन्मने पर माता के लिए भारी है। ऐसी स्थिति में कंजूसी छोड़कर अपने पुरोहित से विधिपूर्वक त्रिखल शांति करानी चाहिये। विशेष रूप से इस अवसर पर तीन अन्न, तीन वस्त्र, और तीन धातु (चांदी, सोना और तांबा) का दान किया जाता है। इसमें पीली सरसों का हवन किया जाता है। पंड़ितों का विचार है कि जन्म से 11 वें दिन उक्त शांति विधान करें। रूद्र सूक्त और शांति सूक्त का पाठ करावें।

बालक के दाँत उगने का शुभाशुभ फल

यदि कोई बालक उगे हुये दाँतों के साथ जन्में तो यह माता–पिता के लिये बहुत ही अशुभ होता है। इसमें भी यदि दाँत नीचे की पंक्ति में हो तो विशेष ड़र नहीं, ऊपर की पंक्ति में विशेष अरिष्ट कहा है। यदि जन्म के कुछ माह बाद दांत ऊपर के मसूड़ों मे निकले तो इसे के लिए बुरा मानते है। मामा को शांति करानी चाहिये। एक मास में दाँत निकले तो बालक को ही खतरा हो, दूसरें मास में दाँत निकलने पर छोटे भाई पर भारी (या छोटा भाई जन्मे ही नही) तीसरे माह में बहिन के लिए अरिष्ट, चौथें माह में भी भाइयों के लिए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अशुभ, पाँचवे माह में बड़ा भाई बीमार पड़े, उसकी आयु को खतरा है। छठे माह में दाँत आने पर बालक जीवन में बहुत प्रकार के भोगों का आनंद लेवे। सातवें माह में दाँत निकलना पिता के लिये शुभ, आठवें माह में बालक के शरीर को पुष्ट करें, 9 वें माह मे बालक धनी हो, 10, 11,12 वां माह भी दाँत निकलने के लिए सुख-समृद्धि दायक माने गये है।

यदि बालक का जन्म दांतों सहित हो या अशुभ महिनों में दांत निकले तो बालक को साने के सिहांसन पर बैठाकर औषधियों से, बीजों से, पंचगव्य से स्नान करायें। विधाता की पूजा करें। अग्नि में हवन करें। 7 दिन ब्राह्मणों को भोजन करायें और चादीं के सिक्के दक्षिणा में देवें। दही, दूध, शहद से पीपल की समिधाओ में 108 आहुति देवें। यदि पहले ऊपर के दांत निकल जाये तो मामा को चाहिये कि सोने, चांदी या कांसी के कटारे में दही-भात भरके, वस्त्र और आभूषणों से सज्जित अपने भानजे को हाथों में देवें। उसका प्रेम और आदर से आलिंगन करे और उससे मेरे समस्त कुल की रक्षा कर, हमारा कल्याण कर, अपनी माता का मंगल कर, अपनी आत्मा को मेरी आत्मा के साथ स्थापित कर और मेरे साथ चिरकाल तक जीवित रहे। फिर ब्राह्मण बालकों को भोजन करायें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहण काल में क्या करें, क्या न करें ?

ग्रहण काल मे जप, दान एवं हवन करने से बहुत फल प्राप्त होता है। सूर्य ग्रहण का महत्व कुरूक्षेत्र में सर्वाधिक बताया गया है। वसुदेवजी ने भी सूर्य ग्रहण के समय कुरूक्षेत्र में जाकर स्नान, यज्ञ एवं दानादि किया था।

सूर्य ग्रहण के समय में मंत्र–दीक्षा का विशेष महत्व है। इसमें मास, नक्षत्र आदि कुछ भी नहीं देखना पड़ता। जो लोग मंत्र सिद्ध करना चाहते उनके लिये भी यह काल सर्वोत्तम है। ग्रहण काल में शयन करना, मल–मूत्र का त्याग करना, भोजन आदि करना वर्जित है। बाल, वृद्ध एवं रोगियों के लिये कोई प्रतिबंध नहीं है। ग्रहण स्पर्श के समय स्नाान करना चाहिये एवं मोक्ष के वक्त दान आदि देकर पुनः स्नान करना चाहिये। इस वक्त स्नान बिना मंत्रों, वस्त्र पहिने होता है। ग्रहण काल में सभी वर्गो को सूतक लगता है। दूध, दही, घी, भोजन, जल आदि में कुशा (ड़ाब) ड़ालने से वे दूषित नही होते। गंगाजल अपवित्र नहीं होता। सूर्य ग्रहण रविवार को हो और चंद्र ग्रहण सोमवार को हो तो यह चूड़ामणि कहलाता है। यह अधिक फलदायक माना जाता है। चंद्र ग्रहण में स्पर्श से 9 घंटें पहले और सूय ग्रहण में 12 घण्टे पहले सूतक होता है। गर्भवती स्त्री चौथे महिने के बाद चंद्र ग्रहण को न देखें, सूर्य ग्रहण तो वर्जित है ही। ग्रहण काल में मूर्ति को स्पर्श नहीं कर सकते। मंदिर में फाटक बंद हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहण काल में दान ब्राह्मण को न दे। डोम, भगत आदि शूद्र वर्णो को देवें। चंद्र ग्रहण में गोदावरी तथा सूर्य ग्रहण में नर्मदा नदी के जल का विशेष महत्व है।

ग्रहण का शुभाशुभ फल कैसे जानें ?

अपनी जन्म राशि मे ग्रहण हो तो पीड़ा, दूसरी राशि में हो तो हानि, तीसरे में हो तो लक्ष्मी, चौथे में हो तो व्यथा, पाँचवी में में पुत्रादि की चिंता, छठी में सुख, सातवीं में स्त्री को पीड़ा, आठवी राशि में स्वयं को पीड़ा, नवीं राशि में मान नाश, दसवीं में सुख, ग्यारहवी में अर्थ–लाभ एवं बारहवीं राशिमें अर्थ–हानि होती है। पृथ्वी चन्द्रोदय के विष्णु धर्म में कहा गया है कि जिस नक्षत्र में ग्रहण हो, उस नक्षत्र में जन्में व्यक्ति को विशेष पीड़ा होती है।

ज्वालामुखी योग क्या है ?

तिथि और नक्षत्र के संयोग से ज्वालामुखी नामक अशुभ योग की उत्पत्ति होती है। इसमें शुभ कार्य वर्जित है। जब एकम को मूल नक्षत्र और पंचमी को भरणी नक्षत्र हो तो ज्वालामुखी योग होता है। ये कुल पांच है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पड़वा मूल, पंचमी भरणी।
अष्टमी कृत्तिका, नवम् रोहिणी।।

दशम आश्लेषा को तूं बांच।
ज्वालामुखी नक्षत्र यहीं पांच ।।

जन्में तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गांव।
नारी पहने चूड़लो, पुरूष विहीनी होय।।

बोवे को काटे नहीं, कुअे न उपजे नीर।
ये ज्योतिष के चुटकले, धरों हिये अकसरी।।

ज्वालामुखी नक्षत्र में लड़ाई करने से हार होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साढ़े साती के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए क्या करें?

1. शनिवार को तेल में अपना मुंह देखें। उस तेल में गुलगुले, मीठी चीजें आदि बनाकर गरीब को, भैंस को और कुत्ते को देवें।

2. बंदरों को गुड़ और चना खिलाएं। विशेषकर शनिवार को।

3. शनिवार को नंगे पैर मन्दिर मे जाकर एक नारियल व 7 बादाम छिलकों वाली 7 शनिवार चढ़ाए।

4. उत्तर–प्रदेश के किसी गांव में एक गरीब ब्राह्मण के घर एक स्वामी जी पधारे। ब्राह्मण ने बड़ी आवभगत की। बाद में बातचीत में ब्राह्मण ने अपनी साढ़े साती और आर्थिक कष्टों की बात बताई। स्वामी जी ने कहा जाओ शनिवार को खैर की लकड़ी लाकर घर में गाड़ देना। हर शनिवार उस पर तेल चढ़ाना। तुम्हारे सब कष्ट दूर हो जायेंगे। वास्तव में उसी दिन से उसके दिन फिर गये।

5. हनुमानजी की ऐसी मूर्ति देखें जिसमें उनका मुंह दक्षिण की ओर हो। फिर प्रत्येक मंगलवार और शनिवार को चमेली के तेल में सिंदूर का चोला चढ़ावें, गले से नीचे–नीचे।

6. बिच्छु जड़ी (जिसके छुने से बिच्छु काटने जैसा दर्द हो), शनिवार को लावे। उसे चाँदी के ताबीज में जड़वा कर धारण करें।

7. 49 तिल के लड्डू गुड की चासनी में बनाएं। प्रत्येक लड्डू में एक–एक सिक्का रखें। वे लड्डू शनिवार से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुरू करके लगातार 49 दिन तक शनि मन्दिर में दोपहर 12 बजे या शाम को बिना बोले चढ़ावें।

शनि+शुक्र का योग- उन्नति बहुत विलंब से

यदि किसी भी लड़के या लड़की की जन्म कुंड़ली में शनि और शुक्र एक साथ किसी भी भाव में बैठे हुये हो तो और बिना कुछ भी देखें आप गारंटी से कह सकते है कि इनके विवाहित जीवन में अस्वाभाविकता रहेगी। अस्वाभाविकता में पति-पत्नि की उम्र मे काफी अंतर हो सकता है। एक पक्ष विधुर, विधवा या तलाक शुदा हो सकता है। यदि केन्द्र में पाप ग्रह बैठे हो तो उनके भूत-प्रेत की बाधा भी हो सकती है। प्रायः ऐसे जातको की कमाई से माता-पिता को सुख नहीं मिलता। सच तो यह है कि प्रायः माता-पिता के स्वर्गवास के बाद ही ऐसे जातक उन्नति करते है। मेरा अनुभव पुरूष जातक के लिए है। प्रायः ये माता-पिता के लिए भारस्वरूप होते है। माता-पिता इनसे दुःखी रहते है।

राहु और केतु के व्रत

राहु के लिए शनिवार का व्रत ही उत्तम रहता है। दान में नारियल, भूरा कंबल देना चाहिये। पक्षियों को अनाज ड़ालना चाहिये। राहु के तांत्रिक मंत्र की 18 या 3 माला जपें। रात को दीपक जला कर पीपल की जड़ में रख दे। काले वस्त्र व्रत के दिन धारण करे। इससे शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है। राज्य से लाभ होता है।

केतु का व्रत मंगलवार की तरह ही है। इसमें केतु के तांत्रिक मंत्र की 5 माला जपनी चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh